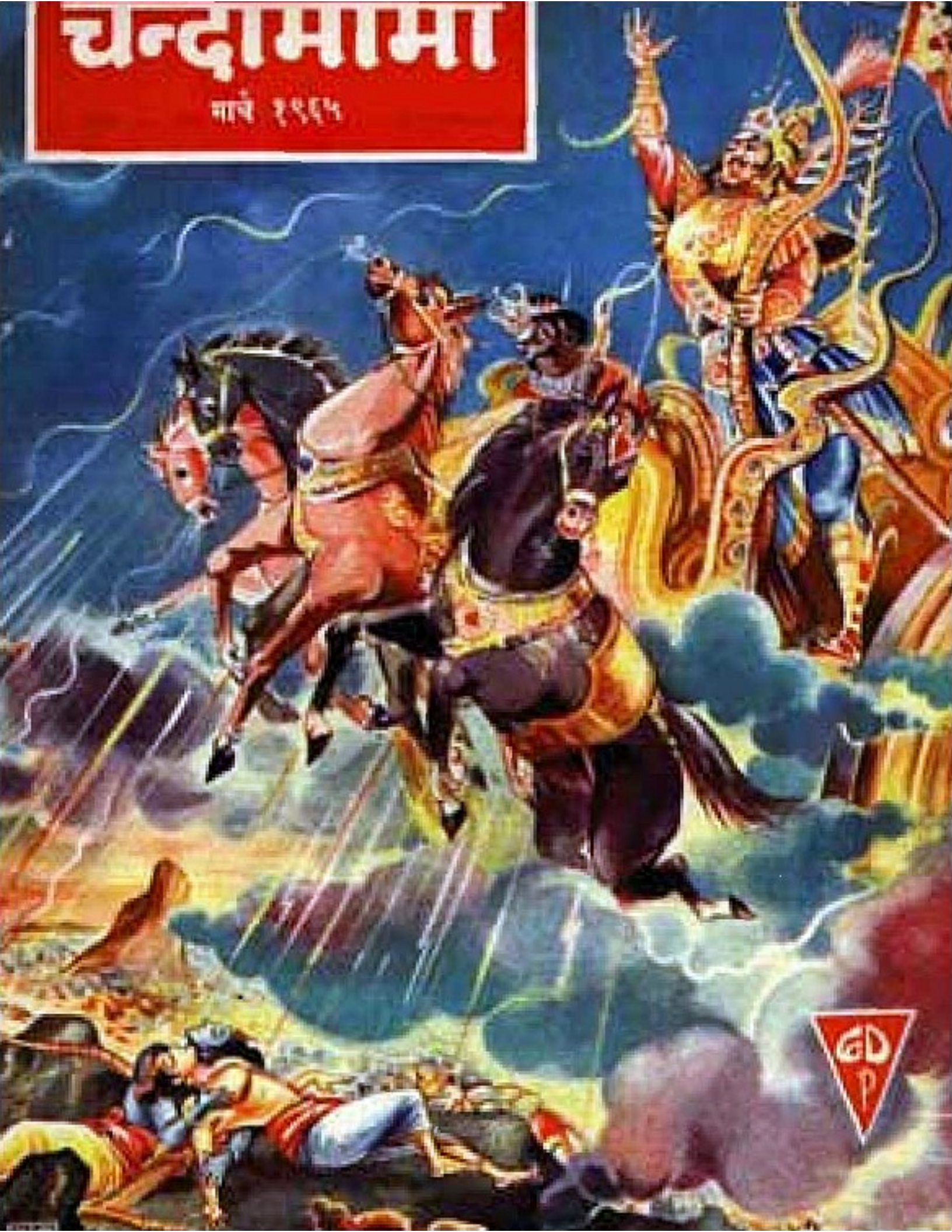


चन्दा मामा

माघे १९६५



Symbol of Quality Printing...



PRASAD PROCESS PRIVATE LIMITED

INCORPORATED IN INDIA
BOMBAY & BANGALORE

जीवन यात्रा के
पथ पर शक्ति की
आवश्यकता है।



इनकी लाल-शर पिलाइये
(डाक्टर बालामृत)

डाक्टर (४० रु० के० समान) प्रदर्शित लि० अनामिका-२८

चन्दासामा

३०५-

विष्णुकोष	१
आर्य समाज का इतिहास	२
वेदों का अर्थ	३
मुनिशान्ति	४
विष्णु का अर्थ	५
मित्र का अर्थ	६
कन	७
नक्षत्रों का अर्थ	८
भारत का अर्थ	९
सूक्तों का अर्थ	१०
राज्य का अर्थ	११
संस्कृत का अर्थ	१२
संस्कृत का अर्थ	१३
संस्कृत का अर्थ	१४
संस्कृत का अर्थ	१५
संस्कृत का अर्थ	१६
संस्कृत का अर्थ	१७
संस्कृत का अर्थ	१८
संस्कृत का अर्थ	१९
संस्कृत का अर्थ	२०



मुन्नु वदल गय्या

[illegible][illegible]

સાંસ્કૃતિક મંત્રીશ્રી
શ્રી રાજેન્દ્ર પ્રસાદ શર્મા
શ્રી અમર નારાયણ ગુપ્તા
અધ્યક્ષ

૧૭

[illegible][illegible]

पुस्तिका

प्लस्टिकले

[illegible]

— ११५ —

• • • • •

बच्चों
के लिए
अनुपम मीठा
एनोस्ट
टाईनी टोट

बचपन बचपों की आलीशान दुनिया है।
वहाँ जो मीठा है, वही है। वही है।
वही है। वही है। वही है। वही है।
वही है। वही है। वही है। वही है।
वही है। वही है। वही है। वही है।
वही है। वही है। वही है। वही है।
वही है। वही है। वही है। वही है।
वही है। वही है। वही है। वही है।
वही है। वही है। वही है। वही है।
वही है। वही है। वही है। वही है।

EVERHEST

TINYTOT

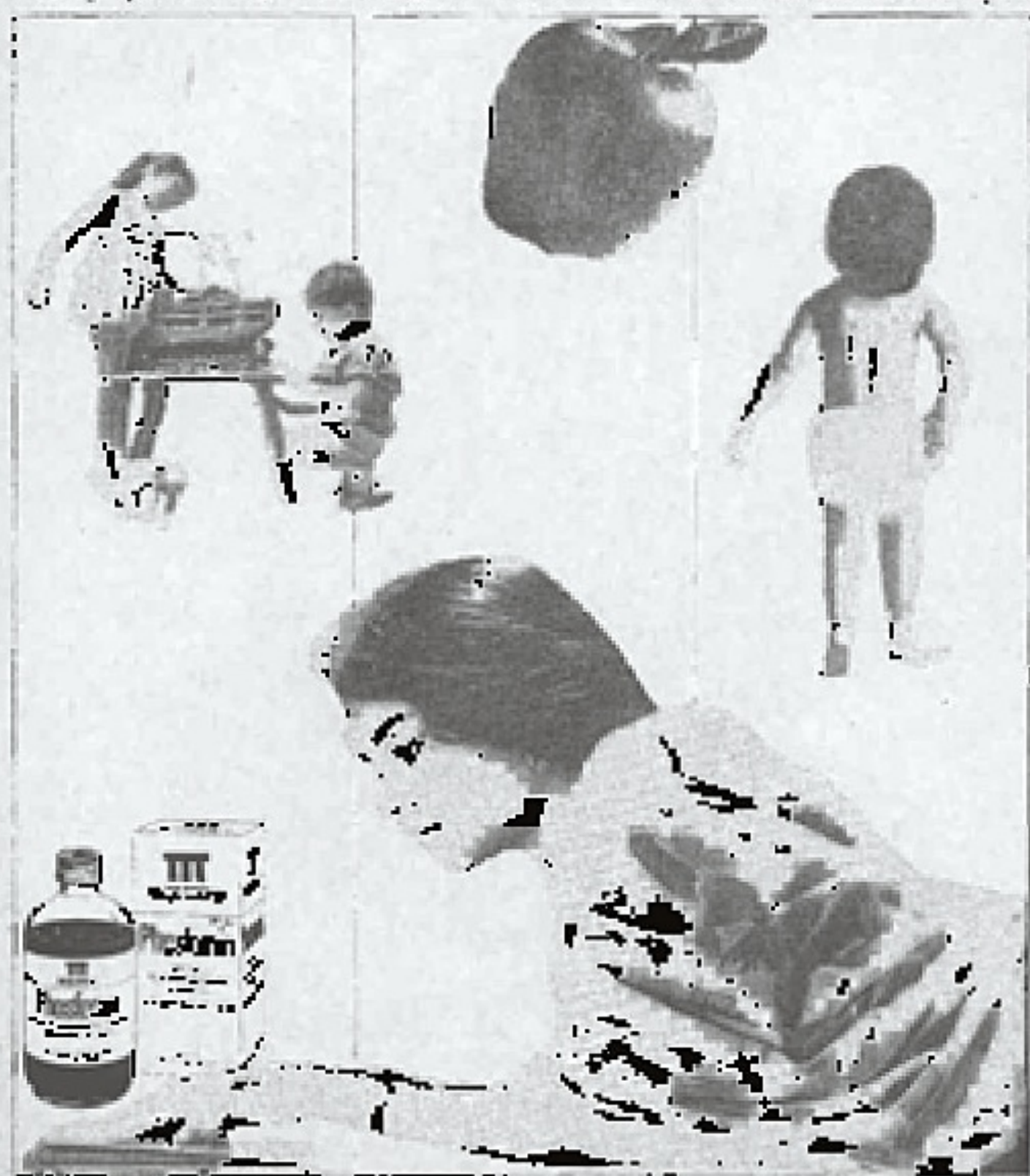


MODEL
TINY TOT
Capacity: 150 cc

विक्टरी फ्लास्क कम्पनी लि. लि.
बम्बई & जयपुर & दिल्ली & रायपुर

सारे परिवार के स्वास्थ्य के लिये फॉसफॉमिन

फॉसफॉमिन विटामिन का एक ऐसा सार है जिसका उपयोग सभी के लिये एक ही प्रकार की मात्रा में ही करने की आवश्यकता नहीं है। बच्चे के लिये मात्रा कम और बड़े के लिये मात्रा अधिक है। फॉसफॉमिन के उपयोग से बच्चे और बड़े दोनों का स्वास्थ्य बढेगा। फॉसफॉमिन एक सार है जिसका उपयोग सभी के लिये एक ही प्रकार की मात्रा में ही करने की आवश्यकता नहीं है। बच्चे के लिये मात्रा कम और बड़े के लिये मात्रा अधिक है। फॉसफॉमिन के उपयोग से बच्चे और बड़े दोनों का स्वास्थ्य बढेगा।



फॉसफॉमिन (Fosfo-Min) एक सार है जिसका उपयोग सभी के लिये एक ही प्रकार की मात्रा में ही करने की आवश्यकता नहीं है।

ब्रिटेनिया
ग्लैक्सो

[illegible]

ब्रिटेनिया
जिस्कुट



ऑफिस में 81 दिन छुट्टा मना जरूरी है...

टिनोपाल सफ़ेद कपड़ों को अधिक सफ़ेद बनाता है
सफ़ेद कपड़ों को टपकीला बनाता है।

आपकी आंखों पर सफ़ेद
आपकी है, वह आपकी है...
हैं। इसके लिए आपकी आंखों
को छुट्टा मना जरूरी है।
आपकी आंखों को छुट्टा मना
जरूरी है। आपकी आंखों
को छुट्टा मना जरूरी है।

आपकी आंखों पर सफ़ेद
आपकी है, वह आपकी है...
हैं। इसके लिए आपकी आंखों
को छुट्टा मना जरूरी है।
आपकी आंखों को छुट्टा मना
जरूरी है। आपकी आंखों
को छुट्टा मना जरूरी है।
आपकी आंखों को छुट्टा मना
जरूरी है। आपकी आंखों
को छुट्टा मना जरूरी है।



अधिक सफ़ेद कपड़ों को अधिक सफ़ेद बनाता है।
अधिक सफ़ेद कपड़ों को अधिक सफ़ेद बनाता है।

अधिक सफ़ेद कपड़ों को अधिक सफ़ेद बनाता है।

सीखने में
देर क्या
सबेर क्या!

1. *אברהם* ו
 2. *ישראל* ו
 3. *יהודה* ו
 4. *לוי* ו
 5. *יהויה* ו
 6. *יהויה* ו
 7. *יהויה* ו
 8. *יהויה* ו
 9. *יהויה* ו
 10. *יהויה* ו
 11. *יהויה* ו
 12. *יהויה* ו
 13. *יהויה* ו
 14. *יהויה* ו
 15. *יהויה* ו
 16. *יהויה* ו
 17. *יהויה* ו
 18. *יהויה* ו
 19. *יהויה* ו
 20. *יהויה* ו
 21. *יהויה* ו
 22. *יהויה* ו
 23. *יהויה* ו
 24. *יהויה* ו
 25. *יהויה* ו
 26. *יהויה* ו
 27. *יהויה* ו
 28. *יהויה* ו
 29. *יהויה* ו
 30. *יהויה* ו
 31. *יהויה* ו
 32. *יהויה* ו
 33. *יהויה* ו
 34. *יהויה* ו
 35. *יהויה* ו
 36. *יהויה* ו
 37. *יהויה* ו
 38. *יהויה* ו
 39. *יהויה* ו
 40. *יהויה* ו
 41. *יהויה* ו
 42. *יהויה* ו
 43. *יהויה* ו
 44. *יהויה* ו
 45. *יהויה* ו
 46. *יהויה* ו
 47. *יהויה* ו
 48. *יהויה* ו
 49. *יהויה* ו
 50. *יהויה* ו
 51. *יהויה* ו
 52. *יהויה* ו
 53. *יהויה* ו
 54. *יהויה* ו
 55. *יהויה* ו
 56. *יהויה* ו
 57. *יהויה* ו
 58. *יהויה* ו
 59. *יהויה* ו
 60. *יהויה* ו
 61. *יהויה* ו
 62. *יהויה* ו
 63. *יהויה* ו
 64. *יהויה* ו
 65. *יהויה* ו
 66. *יהויה* ו
 67. *יהויה* ו
 68. *יהויה* ו
 69. *יהויה* ו
 70. *יהויה* ו
 71. *יהויה* ו
 72. *יהויה* ו
 73. *יהויה* ו
 74. *יהויה* ו
 75. *יהויה* ו
 76. *יהויה* ו
 77. *יהויה* ו
 78. *יהויה* ו
 79. *יהויה* ו
 80. *יהויה* ו
 81. *יהויה* ו
 82. *יהויה* ו
 83. *יהויה* ו
 84. *יהויה* ו
 85. *יהויה* ו
 86. *יהויה* ו
 87. *יהויה* ו
 88. *יהויה* ו
 89. *יהויה* ו
 90. *יהויה* ו
 91. *יהויה* ו
 92. *יהויה* ו
 93. *יהויה* ו
 94. *יהויה* ו
 95. *יהויה* ו
 96. *יהויה* ו
 97. *יהויה* ו
 98. *יהויה* ו
 99. *יהויה* ו
 100. *יהויה* ו

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

James Earl Ray was born in 1928 in Mississippi. He was a member of the Black Panther Party and was involved in the assassination of Dr. Martin Luther King Jr. in 1968. Ray was convicted of the murder and sentenced to death. He was later released and fled to London, where he lived under the alias of Eric Starvo Galt. Ray was eventually captured and returned to the United States, where he was executed by hanging in 1969.



COUPON

Please send no money to the Society.
 000000 000000 000000 000000 000000

1-4

4.000



चन्द्रामामा

संवाक्य : अक्षराश्री

कहते हैं, साठ वर्ष के बाद फिर वसपन आता है।
कह नहीं सकते कि यह कहां तक ठीक है, या
यह सम्भव भी है।

पर हमारे देश में प्रायः यह देखा जाता है
कि पट्टिपूर्ति—साठवीं वर्ष गाँठ, एक विवाह की
तरह बड़े जोर शोर से मनाई जाती है।

पर पट्टिपूर्ति का क्या महत्व है,
यह निरूपित करने के लिए हम इस अंक में
एक कहानी दे रहे हैं।

सम्भव है, इस सम्बन्ध में और कहानियाँ
हों, या काव्य हों। उम्मीद है कि यह आपको
पसन्द आयेगी।

वर्ष : १५

मास : १९५५

अंक : ७



भारत का इतिहास



कहना होगा, बोझ की अपेक्षा शेरशाह
अपका शासनक था। उसने पाँच वर्ष
ही राज्य किया। परन्तु उस बोझे समय
में ही उसने एक आदर्श शासन की
ज्योतिषा की। “इस पठान ने जो शासन
कुशलता दिखाई किसी ने भी—ब्रिटिश
सरकार ने भी नहीं दिखाई।” यह एक
साक्षात् ऐतिहासिक की राय है। मुमि
कर की बगुली, किसानों के हक, पहा
आदि, को प्रामाणिक बनाने के लिए इसने
महन्ध किया। देश की रक्षा के लिए इसने
लम्बी लम्बी सड़के बनवाई। पूर्व बंगाल
के सोनार बाँध से सिन्धु नदी तक १५००
कोस लम्बी उसकी बनवाई हुई सड़क अब
भी है। उसने नहरों के बिना हिन्दु
और मुसलमानों के लिए सराये बनवाई।

“निर्जन स्थल में सोने का पैला रखकर,
सोनेवाले की रक्षा के लिए भी उसने
अलग रक्षण सेना की व्यवस्था की। उसके
शासन में सबको एक ही तरह का स्वाग
मिलता था। राज कुटुम्ब के लोग भी
कानून से बरी नहीं थे।

शेरशाह कोई बड़े कुटुम्ब में पैदा
नहीं हुआ था। पर स्वयंसेवा के कारण
यह भारत के मुख्य मामलों में एक
समझा जाता है। अफजर से पहिले
उम जैसा मजा रखक कोई न था।
अफजर को शासन में जो कुशलता
मिली उसकी बाँध शेरशाह ने ही दाखी
थी। शेरशाह जल्दी मर न जाता, तो
शायद भारत के इतिहास में सुगत सुग
होता ही न।



शेरशाह के साथ वह जफरान साम्राज्य, जिसका उसने पुनरुद्धार किया था शिथिल हो गया। चारम्परिक कलह और अराजकता प्रबल हो उठी। शेरशाह के बाद उसका लड़का सलीम या सुल्तान बना। वह भी पिता की तरह समर्थ था। वह भी जल्दी ही १५५४ नवम्बर में मर गया। उसके नाबालिग लड़के को उसके मामा बादिलशाह ने मरवा दिया और वह स्वयं सुल्तान हो गया। वह बादिलशाह समर्थ नहीं था। उसके समय में जफरान साम्राज्य विचित्र होने लगा।

यही हुमायूँ के लिए अच्छा मौका था। वह पन्द्रह वर्ष बिना कहीं भागता पाये धूमता रहा। उसके माइयों ने उसकी मदद न की। सबसे बड़ा मातृ छोड़ी कामरान था। उसने अपने भाई की सैनिक सहायता तो की ही नहीं। उसके कष्टों में भी उसने उसको कोई मदद न दी।

हुमायूँ के पास बहुत से शरणार्थी जमा हो गये थे। परन्तु उनके खाने-पीने की भी कोई व्यवस्था न थी। सिन्धु प्रान्त में छावनी बनाकर, फिर हुमायूँ ने अपने साम्राज्य की रक्षा की चेष्टा की, पर वह अपने प्रयत्न



में सफल न हुआ। सिन्धु गवर्नर या गुजेन की शत्रुता ने इसमें इत्तल दिया।

१५४२ के अन्तिम महीनों में, जब हुमायूँ सिन्धु के रेगिस्तान में घूम रहा था, तब उसने हमीदा बेगम से शादी की। वह शीत जल अम्बर जैनी की लड़की थी। राजपूत राजा उसको ब्याहण देने में हिचके। वह नमरफोट गया। वहाँ के राजा का नाम राजा प्रसाद था। उसने पहिले हुमायूँ को वचन दिया कि वह बहुत और हाकर राज्य जीतने के लिए मदद देगा, पर अन्त में उसने कुछ नहीं किया कराया।



१५४२ नवम्बर २३ को, जमर कोटर में अफगन का जन्म हुआ।

यह सोचकर कि उसे भारत देश में कहीं मदद न मिलेगी हुमायूँ परास्त गया। वह अपने शाह बहामन की मददता माँगी। उसकी बात भी कि हुमायूँ शिया बने और मिलने का बन्धन का मान्य उसे दे दे। फिर उसने १४,००० की सेना उसे दी। अपने पिता की तरह, हुमायूँ को भी फारसी सेना की मदद में भारत जीतना पड़ा।

१५४५ में बन्धन, काबुल हुमायूँ के कब्जे में आ गया। परन्तु उसने बन्धन फारम को नहीं मौरा। बन्धन को लेकर, फारसी और मुगलों ने कुछ नू नू धे धे भी हुई। बन्धन को कैद कर लिया गया। उसे अन्धा करके मरवा मेज दिया गया।

जल्दारी को भी मरवा मेज दिया। हिन्दाल कहीं सदाई में मारा गया।

नवम्बर, १५५४ में हुमायूँ, फिर हिन्दुस्तान को जीतने निकल पड़ा। १५५५ फरवरी में काहीर, जुलाई में दिल्ली और जामना, हुमायूँ के बंध में आये। उस साम्राज्य का कुछ भाग, जिसे वह अपनी सापरपाही से लो बैठा था, फिर अपने जीत लिया।

फलों के कारण, उसकी मनोवृत्ति बिना तरह बदल गई थी, वह जानने का समय ही न मिला। २४, जनवरी १५५६ में वह दिल्ली में, अपने पुस्तकालय की सीढ़ी से उतरता अचानक चिल्ल गया और मर गया। १४ फरवरी को, जमर को १३ वर्ष की अवस्था में ही मुल्तान घोषित किया गया।



नेहरू की कथा

[८]

ब्रिटेन द्वारा घोषित सुधारों के प्रति कोन्ग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ही अमानुष रहे। इन सुधारों के बारे में चर्चा करने के लिए बम्बई में १९१८ अगस्त में ही विशेष सभा बुलाई गई, उसमें ज्यादातरवाले कोई नहीं उपस्थित हुए। इन सुधारों का, जिन्होंने समर्थन किया, उन्होंने जाकर अपनी अलग संस्था बना ली।

यह सुधार तो तैर थे ही, इस बीच एक और बात भी हुई। देश में राष्ट्रीय आन्दोलन जोर पकड़ता जाता था, राजकीय अभियुक्तों की कैदें खूबवाई हो, इस सम्बन्ध में सलाह देने के लिए सरकार ने एक समिति बनाई, जिसके अध्यक्ष जस्टिस रोलेट नियुक्त हुए। रोलेट की रिपोर्ट उन्हीं दिनों प्रकाशित हुई थी उसका परामर्श बड़ा कठिन था। उनके आचार पर ही कानून भी बनाये गये। ये कानून १९१९. फरवरी में महारुद्र की समिति के तीन मास बाद घोषित किये गये।



रोलेट कानून में आग को हवा-मी दी। देश में खलबली मच गई। इसके कारण गांधी जी राजनीतिक क्षेत्र में आगे आये। मोतीलाल जी ने भी उसके कारण अपनी उदार नीति कुछ अंश तक छोड़ी। जब सरकार ने सुधार उद्घोषित किये, तब उन्होंने उनके बारे में अपनी कुछ कुछ सहमति भी सूचित की। उपाधर जी ने उनका विरोध किया, परन्तु रोलेट कानून के बारे में उनमें कोई मतभेद न था।

“अब क्या किया जाए” कोन्ग्रेस के सदस्यों ने पूछा।



“क्या किया जाय। जब वे अंगल में लगे जायें, तब हम सत्याग्रह शुरू कर देंगे।” गान्धी जी ने कहा।

पर गान्धी जी ने हम सम्बन्ध में कोई उतावलापन नहीं दिखाया। उन्होंने उन कानूनों को वापिस लेने के लिए बाक्सराय को लिखा। बाक्सराय ने गान्धी जी की बात नहीं सुनी। गान्धी जी स्वस्थ न थे, फिर भी वे सत्याग्रह सभा के लिए सदस्य बनाने लगे। सत्याग्रह सभा के सदस्यों को रोलेट कानूनों को छोड़कर, जेल जाना था।

इस कार्यक्रम से जवाहरलाल नेहरू बिल्कुल उत्साहित हुए, उनसे ही बोलीलाल निरुत्साहित हुए। उन्हें जेल में समय बीताना, बीताना न था। जब उन्हें मान्यता हुआ कि जवाहर जेल जाने के लिए उषा से उन्होंने तुरंत गान्धी जी को जवाहरवाद जाने के लिए निमन्त्रण भेजा।

गान्धी जी आये। उनसे जवाहरलाल के सम्बन्ध में बातचीत करने के बाद गान्धी जी ने जवाहरलाल से कहा—“तुम जल्दी में कुछ न करो। अपने पिता को ब्रेक मत पहुँचाओ।”

रोलेट बिल को बाक्सराय ने कानून बनाने की ठानी। गान्धी जी ने घोषणा की, कि सर्वत्र उसके विरुद्ध एक दिन हड़ताल की जाये। पहिले ३० मार्च सत्याग्रह के लिए निश्चित किया गया। पर उसके बाद यह तिथि ६ नवंबर कर दी गई। उस हड़ताल को सफल करने के लिए जवाहरलाल ने अपनी सारी शक्ति लगा दी। कोन्सेस ने भी कल्पना न की थी कि यह सत्याग्रह का दिन इतना सफल होगा। न सरकार ने ही सोचा था।



गान्धी जी ने पहिली बार स्पष्ट रूप से दिखाया कि वे कितनी अच्छी तरह जनता के मन को समझते थे। विदेशी हुकूमत भी हिरान रह गई। सारे देश में जो आन्दोलन छोटी छोटी तरंगों के रूप में शुरू हुआ था वह बड़ी बड़ी तरंगों में परिचित होकर प्रलयंकर हो गया।

३ मार्च को सत्याग्रह के स्वर्गित होने की सूचना दिल्ली नहीं पहुँची। दिल्ली के नागरिकों ने ३० मार्च को ही सत्याग्रह किया। आन्दोलन चौक में हिन्दु मुसलमानों में एक होकर विदेशी सरकार के विरुद्ध अपना असन्तोष प्रकट किया। हुकूमतें बन्द कर दी गई। उस आजाद मस्जिद में, जहाँ कभी मोरनाजेब नवाज पढ़ा करता था एक अजीब बात हुई। स्वामी अज्ञानन्द नामक एक हिन्दु सन्यासीने मुस्लिमों के मसजद वहाँ माथप पिया। इसमें ब्रिटिश और बिगड़ उठे। सैनिकों की मदद से जहाँ जहाँ भीड़ देखी, उसे कितर कितर कर दी, कहीं कहीं गोली भी चलायी।

६ एप्रिल को जब सत्याग्रह हुआ, तो कई धान्यों में पोलीस और सैनिकों ने

गोलियों छोड़ी। पंजाब में लाहौर और अमृतसर में विशेषतः लोगों ने हिंसा का जवाब हिंसा से दिया। कई घर जला दिये गये। बंदे कत्लाद हुए। जमिनों पर हमले भी हुए।

बम्बई से दिल्ली जाते समय आठ अप्रैल को गान्धी जी गिरफ्तार कर लिए गये। परन्तु उनको बम्बई में जाया गया और वहाँ वे १० अप्रैल को छोड़ दिये गये। परन्तु गिरफ्तारी की खबर के कारण बम्बई और अहमदाबाद में गड़बड़ी मच गई।

१५, जर्मन को पंजाब में मार्शल ला घोषित किया गया। जनरल हापर ने जम्मियावाले बाग का हत्याकाण्ड किया। तब तक, जब तक मार्शल ला हटाया नहीं गया, तब तक पंजाब के लोगों पर बड़े सम्बन्धन किये गये। १८५७ के बाद ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध कभी इतना तेज भारतीयों में नहीं उमड़ा था।

और विविध बात यह थी, जिस रेजिमेंट के कारण यह सब हो रहा था, उनका किसी भी सम्बन्ध में यहाँ भी उपयोग नहीं हुआ।

पंजाब हत्याकाण्ड के बारे में ब्रिटिश सरकार को जाँच करवानी ही पड़ी। लार्ड हम्बर के नेतृत्व में चार भारतीय, चार ब्रिटिशों ने मिलकर जाँच की और दो रिपोर्ट उन्होंने पेश की। दोनों में ही

जनरल हापर को दूषित किया गया। जनरल हापर को सेना में निवारक इन्वॉल्व्ड मेजा गया। वहाँ कई से उनके "पराक्रम" के लिए, उसको सोने की तलवार भी दी। भारतीयों की विद्रोही छड़ी न हुई।

इन घटनाओं के कारण मोतीलाल जी भी गान्धी और अण्दरलाल से भाग मिले। तब से एक कदम भी कभी पीछे न रखा, हमेशा स्वतन्त्रता संग्राम के बोझों के जम साग में ही रहे। मोतीलाल को बजा के आन्दोलन के प्रति कोई विशेष आकर्षण न था। हमसे कोई सन्देह नहीं कि बजा प्रतिनिधि अपने इफलैने पुत्र के साथ रहने के लिए ही, वे स्वतन्त्रता बोझा बन गये थे। इनके साथ हर किसी को सम्बन्धित करनेवाला कुछ करनेवाले गान्धी जी का प्रभाव भी उन पर था।





यह दिवस था। जब कोई चिन्ता जीना आवे
 या मान जीना जान, तो वहाँ की सुन्दरियों
 को, स्वयं को और भी दिया ज्ञाने
 समझते मिलेगा और विमल को इस
 मरुत में पहुँचा दिया गया था। परन्तु
 दोनों प्रकाश प्रकाश प्रकाश था। विमल
 वह भी न जान पाती कि मिलेगा की
 क्या दास्य हो गई थी। विमल ने अपने
 जीवन अपने विभिन्न एक दिया था। परन्तु
 विमल की देखात नजमेका, मिथ्य
 विमल के छोटे न था। समझते ही वह
 लकड़ी हो गई थी।

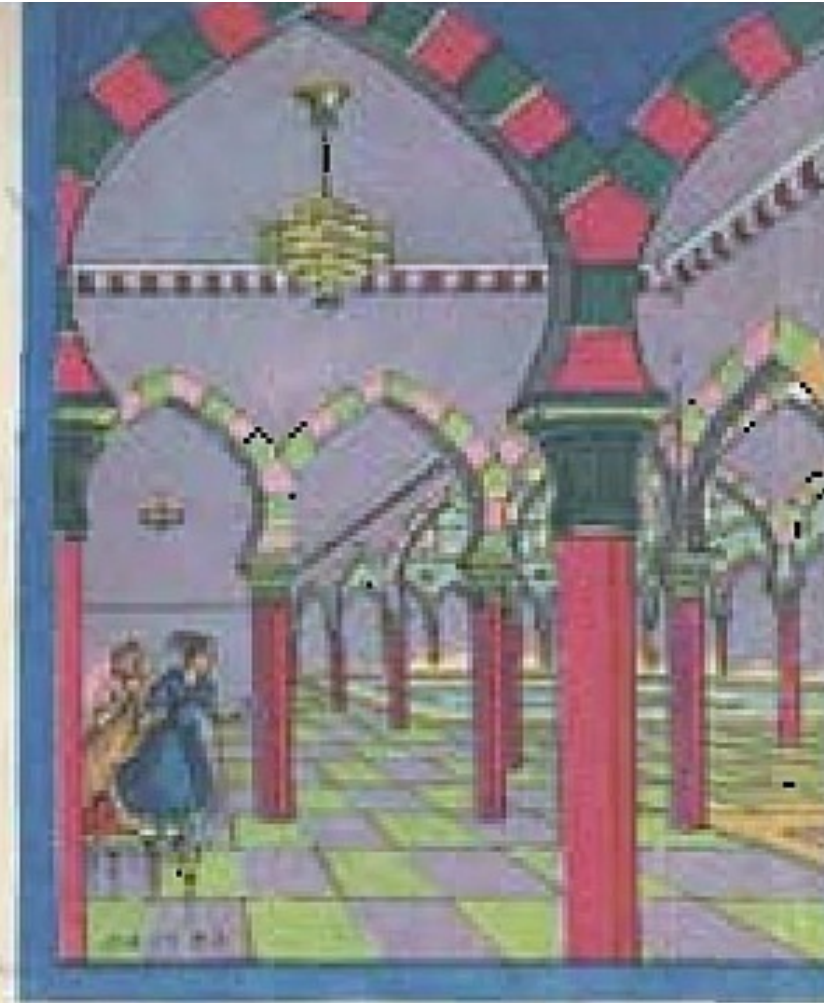
विमल उम्मान मान की यह देना
 रही। उम्मान मान, उम्मान में ही जान
 था। कुछ उनका पेश था। परन्तु वह। यह है
 यह कुछ भी जान न मिलता था। परन्तु
 यह है विमल मिल जाने के बाद, विमल के
 जाना न जान उसे विमल पसन्द न था।

विमल की विमलता यह कम-उम्मान
 की नजहत नजहत नजहत, तो उम्मान
 मान की दया में, मन में दोनों उम्मान हो
 गये होते। उसकी दया के कारण ही
 विमल, विमल की ही न नजहत में
 मिल पाती थी।

हम न जान नजहत उम्मान उम्मान देना।
 विमल उम्मान में नजहत नजहत नजहत। यह
 उम्मान में नजहत, तो नजहत नजहत नजहत
 नजहत में नजहत नजहत नजहत।

विमल उम्मान की नजहत नजहत, विमल
 नजहत नजहत—नजहत, उम्मान मान की
 नजहत की नजहत देना ही जान थी। उनके
 नजहत में नजहत नजहत नजहत।

मान्य फा लोच विमल है। विमलता
 और विमल नजहतमान के इस नजहत में
 यह नजहत, उम्मान उम्मान नजहत नजहत।



अन्तर्गत अन्य अन्वेषण के बड़े भाड़े का लक्ष्य था। इनका सम्बन्ध है उनकी जाने जाने की छद्म निष्ठा हुई थी। तब से तब तक कि निम्नलिखित है। तब का किन्ता पों अधिकार न था। अन्तर्गत की न था।

विद्यार्थी ने पैर नीचे रखा, एक नुस्खी के
द्वारा उसका हाथ पकड़ के बाग में चढ़ा
देती। उसे सहकर, उद्योग ने उसी में
कहना— 'मेरा बड़ा प्रभाव हम दोनों के
लिए अनन्य है।' इसलिए उन्हें ही
यह कहा था।

शर्मा ने जब यह बात निज्जाल ने
कही, तो शर्मा बोला— "तुम्हारे कैम
के सक्ता हैं।"

० इत्येवं विना, अत्रादिक्रमः व्यर्थः ।
० देवि ० इत्येवं विना ।

उन दिनों अजय बड़े आनंदों से एक
अनाथ में आकर, 'कमलधर' के नाम से नाम
में हुआ करता। 'कमल' वह 'कमल' को अपने
नाम से बुद्धे।

[illegible]

॥ माता लक्ष्मी जी का नाम स्तुति है ॥
 सब मनोवांछों को पूर्ण करने वाली हैं ॥
 हे देवी ! तू ही सबके हृदय में ॥
 रहते हैं ॥

"अहं-हं"

“ 1742-3 11 4.25 1”

“निश्चय ही कैदी को यह हम अनन्य श्रेष्ठ
में नहीं दे। उन्होंने विद्रोह का बीज बो दिया
है। वे कैदियों का हैं : जिन्हें अत्यन्त
ही जल्दी में ही उनकी मदद है मगर
नहीं है। नए जेलों के इमारत बर्बाद, मगर
हीन ही हैं।”

कुल दिवा बाद शशिदीनजी के गेले का जो
 जो मकर नहीं बना गया। तेरे माँ में बड़े
 कष्ट देवकर मुझे पाना। ये जब का मकर
 की थी, तो मुक्त रहान कपटी थी। मैं
 मरने के साथ कपटी में था, किसी का
 मर था। कपटी के हस्तुले मे इसे रहने
 की लगत न थी। इसी कारण कपटी
 शिपरी मे शायद मरना। मेरी का नाम
 मरे। उन दिवा कदमर भी मर कि
 मरे मे। इस दिवा मर का मर मर
 मरने का मे मर मरकर मर। उस
 मरने के मरने का मर दिवा। उन
 मरने मे मर मरकर, मर के चिह्नी।
 मरने की मरी मे मर मरकर मर, म
 मरने मे मरने का मर मरने के
 मरने मर के मरने मर मर। मरने
 मे मरने का मर मरकर मर। मरने

मे मे मे मरने के मरने। मर का
 मरने का मर मरकर मर। मरने
 मरने दिवा। मरने मर मरने मरने मे,
 मर मरी मे मे मरने का।

मरने मर मरने मरने मरने मे मे मे
 मे मरने मरने, मरने मे मरने—“मर
 मर मरने मरने मरने मरने का।”

“मर, मर, मरने का मरने मरने का
 नाम था। मेरे मरने मे मे मरने दिवा।
 मेरे नाम मरने मरने।” मरने मे मरने।

“मरने का मरने मरने मरने।”
 मरने मे मरने मरने मरने।—“मरने
 कैसे मरने मरने।”

“मरने मे मरने मरने मरने मरने।
 मरने मरने मरने मे मे मरने का मरने
 मरने।” मरने मरने मे मरने।

मरने मरने मरने मरने मरने। मरने मे





मिथद का दिया हुआ फल

विकरके ने रूड न छोड़ा। पैर के चाल
गया। पैर पर से शाय को उतारकर
जंगल पर डाल वह हमेशा की तरह
दुःखी इनसान की ओर चलने लगा।
एक दिन में स्थित बेताल ने कहा—“जो
काम तुम कर रहे हो वह ठीक है या
सालत, यह तो मैं नहीं जानता हूँ। परन्तु
जमी जमी सालत काम करने के लिए भी
प्रायः वह मन्त्रेष्ट रखते में भा बदना है
इसके अज्ञान के रूप में तुम्हें मिथद
की कहानी सुनाता हूँ। तुम्हें यक़ीन न
मायूस होगी, सुनी।”

पहिले जमी भार्गव जमी नाम का जमी
वाक़्तन रहा करता था। उसकी जमी का
नाम नामजोनी था। उनके बहुत दिन तक
मन्त्रात्म न हुई। उनकी यह फ़िक्र थी कि
कोई तर्पन करके उनकी नरक में नहीं

बेताल कहानी



बचावेगा। नामधेयी भी अपने बरतन पर चिन्तित थी।

जब एक सिद्धपुरुष उनके नगर में से जा रहा था, तो मार्गव शर्मा को दिखाई दिया। सब मार्गव शर्मा ने अपनी रासन के बारे में उससे कहा और पूछा कि उसके माय में सम्मान थी कि नहीं। सिद्ध ने उसका हाथ देसकर कहा—“क्यों माई सम्मान के लिए छटपटाने हो : गुन्दारे इस जन्म में सम्मान नहीं है, दान-धर्म करने हुए जीवन बिताओ।”

“स्वामी, अगर आप जैसे सिद्ध पुरुष संवत्स कर लें, तो माय भी बहुत सज्जता है। आप कृपा करके हमें एक सड़का दिखावाइये....” मार्गव शर्मा ने कहा।

सिद्ध मान गया। उसने एक आम लिया। उस पर मन्त्र पढ़ा और मार्गव शर्मा को दे दिया। “इसके खानेवाले को सर्व गुणसम्पन्न पुत्र की प्राप्ति होगी। अपनी पत्नी को बड़ा शीघ्र खाने के लिए पढो।” यह कहकर वह चला गया।

मार्गव शर्मा बड़ा खुश हुआ। उस फल को खाकर उसने अपनी पत्नी को दिया। “इसे खाने से एक सुपुत्र मिलेगा। यह एक सिद्ध ने दिया है इसे खाने करके खाओ।”

मार्गव शर्मा जब यह बात अपनी पत्नी से कह रहा था, तो पड़ोस की श्री आदिरक्ष्मी ने उसके घर आने सुना। उसने पनि के दिये हुए आम को पूजा के कमरे में भी रखते देखा। फिर आदिरक्ष्मी अपना काम निबटाकर चली गई। घर जाने जाते वह पूजा के कमरे में से आम भी उठाकर चली गई।

आदिरक्ष्मी के आम उठाने पर वह चरमन था कि कगलतार उसके साथ लड़कियाँ

हुई थी। उसके भी उसकी इच्छा पूरी न हुई थी। उसने मार्गव को, अपनी उर्मी से कहते सुना था कि उस आम के खाने से पुत्र पैदा होगा। स्वयं पुत्र पाने की अभिलाषा से उसने उस फल को खुरा लिया था। उसने घर जाने ही स्नान किया और बिना किसी को देखे फल खा भी लिया।

नागवेणी ने जब अगले दिन स्नान करके फल खाया था, तो पुत्र के रूप में फल न था। बहुत खोजा। पर वही कोई फल न मिला। उसे घर समेत लगा कि पति क्या सोचेंगे, जब उसके माध्यम होगा कि फल खो गया था। बड़ी बीवध के बाद फल ने खाने से। वहीं उसके गुम होने के बारे में माध्यम होने ही, उनके हृदय की भावना न रुक रुक जाये। इसलिए नागवेणी ने अपने पति से कह दिया कि उसने फल खा लिया था।

नागवेणी के कह हलसे दूर न हुए, पर अभी धुर धुर थे। निद्रा के दिने हुए फल के खाने के बाद उसकी गर्भवती होना था और जो गर्भवती बनेगी, उसकी माँ भी बनना था। कुछ समय बाद नागवेणी ने



लोगों से कहा कि वह गर्भवती थी। उसके भाई कम्पु बड़े संतुष्ट हुए। बहुत दूर से उसकी छोटी बहिन भागीरथी उसकी देखने आई। नागवेणी को माध्यम हुआ कि भागीरथी को भी तीन मास पर गर्भ था। उसने अपनी बहिन को बताया कि वह किस समस्या में थी। “यदि मुझे इस संकट से बाहर करना है, तो जो वस्तु तुम्हें पैदा हो, वह मुझे दे देना और वह किसी को न माध्यम हो।” उसने कहा।

“यदि मेरे पति माल जाये, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।” भागीरथी ने कहा।



भागीरथी जब अपने भय जाने लगी, तो भागीरथी की उसके साथ जाने को सिद्ध हुई। उसने अपने मन में कहा—“जब बस तो मुझे जाऊँगी है। मेरी जलिन ने तो तो बचो की वन दिया है। पत्थर होने ही दूँके के साथ जा जाऊँगी” इसके लिए जलिन जमा मार गया।

भागीरथी चार बचो की थी। उसके सड़नेवाली को और लड़के भी। उसपर पति दुर्घटना था। उसके लव्य अधिक थे। उसने पत्नी से कहा—“यदि तुम्हारी बहिन को बचा लेता है, तो उसे अपने गहने देने

देते” भागीरथी इसके लिए भी मान गई। भागीरथी का यथा समय प्रसव हुआ। जैसा भागीरथी ने वाला था, वैसे उसके लव्य ही हुआ। भोजन करीब, बहुत लुप्त सुताकर किया गया। भागीरथी उस लड़के को और अपनी बहिन को साथ लेकर, अपने लव्य के लिए निकली। उसके सारे गहने भागीरथी के मन में थे।

अपने लव्य घर जान बहुत लुप्त हुआ कि लव्य बिन बर, सिद्ध की दया से उसकी पत्नी ने एक लड़के को जमा दिया था। उसने उस लड़के का नाम सिद्धरूप रखा। जब पति ने पूछा कि गहने सब लव्य थे, तो उसने कहा कि गहने लव्य लव्य, पर पत्नी ने बचो, भोजन करने लव्य उसने एक लव्य दिखाएँ के लव्य थे, पर पति उन्हें लुप्त दे लव्य। उसने लव्य लव्य लव्य लव्य लव्य। लव्य भागीरथी का लव्य लव्य लव्य लव्य।

नाम लव्य के लव्य, लव्य की लव्यलव्यी के भी एक लव्य पैदा हुआ। लव्य नाम लव्य लव्य लव्य।

लव्य और लव्य का लव्य-लव्य लव्य एक लव्य हुआ। पर उन दोनों का लव्यलव्य

जादि सब मिल जा । यह मिलता होते पर छोड़ दिया, एक नीच स्त्री के साथ होते और भी बानी गई । माधव बुद्धिमान रहने लगा ।

विवेकी, विनीत और सदाचारी था । शत्रु मूर्ख था । दुष्ट था और वे लक्षण बहने ही जाते थे । मर्त्याव शर्मा को सिद्ध के बलावे हुए गुप्त पदोमा के माधव में नो दिखाई दिखे, पर अपने लड़के बरद में बिल्कुल न दिखाई दिने । बरद ने पहिले को घर में बोरी करने कुछ की, फिर और के घर भी बोरी करने लगा । विना ने उसको बहुत सुधारना चाहा, पर वह विरहता ही गया । अन्तिम, उसने अन्ता उसे देखकर कहा—“सुन्दारा इस प्रकार कुछ दिनों बाद बरद बीमार पड़ा । उसको उस स्त्री ने मगा दिया । कई दिन वह मृत्ता प्यासा, अंगालो और घाटियों में धूमता-फिजना रहा । फिर वह अचानक में मर गया । क्योंकि मरने समय उसकी इच्छाये पूरी न हुई थी, इसलिए वह पिशाच बन गया । वह अभी अभी पिशाच बना था, इसलिए और पिशाच उसको अपने सगदार के पास ले गये । पिशाचों के नाचक ने बिरहता ही गया । अन्तिम, उसने अन्ता उसे देखकर कहा—“सुन्दारा इस प्रकार



विश्राव हो जाना—केवल तुम्हारी ही गल्ती नहीं है। इसके लिए जो वस्तुतः जिम्मेवार है, तुम उसे पकड़कर सजाओ।”

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—
“राजा, विश्राव परद को किसे मराना चाहिए? धन के लालच में अपने लड़के को अपनी बहिन को देनेवाले भगौरथी को? या नागवेणी को, जिसने उसको अपना लड़का मानकर, उसको पाला-पोसा था? यदि तुमने इन सन्नेहों का जानबूझकर निवारण न किया, तो तैरा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।”

इस पर विक्रमार्क ने कहा—“परद के विश्राव हो जाने का कारण भगौरथी न थी। उसने अपने लड़के को भी-भस्मतिवाले के घर में गोद दिया था। हमें कोई गल्ती नहीं है। छुटपन में उसे दूध देकर, उसने

अपना मातृ पर्व भी निभाया। परद, अपने घर में बड़ा होने के कारण, धर्मियों के घर बड़ा होने के कारण, कई महत्त इच्छाओं के साथ भर गया और विश्राव हो गया। नागवेणी के रोषण ने ही उसे ऐसा बनाया था। पर गल्ती नागवेणी की भी न थी। उसके प्रति कितनी ही आशा से पल्ल लाये थे। उसके गुम हो जाने की बात सुनकर, नहीं उनके पास न बने जाये, वह सोचकर ही उसने परद का पोषण किया था। परद के विश्राव होने का असली कारण आदिन्द्रमी का सिद्ध कर दिया हुआ काम चुराना था। विश्राव को उसे ही मरा करना चाहिए।”

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल सब के साथ अदृश्य हो गया और फिर वेद पर जा सवार हुआ।





मन्त्रवाला कान

जापान देश में एक युवक था। एक बार जब वह समुद्र के तट पर खड़ा रहा था, तो उसने एक गढ़े में एक मछली को छटपटाते देखा। वह तबान में शब्द बतकर भा गई थी और कैसा गई थी, वापिस नहीं आ पा रही थी।

युवक को उस मछली को देखकर दया आई। उसने उसे उठाकर समुद्र में डाल दिया। वह समुद्र होता कि उसने एक प्रार्थना की महामाया की थी, वह जा रहा था कि किसी ने पीछे से बुलाया, "जग खरो।"

जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो एक श्री दिखाई दी। चूंकि उसने उसको पहिने नहीं देखा था, इसलिए वह सोच कि वह किसी और को बुला रही थी, जाने वह दिया।

"तुम्हें ही बुला रही हूँ। जग खरो...." श्री ने फिर बुलाया।

वह जाकर कड़ा कड़ा उसके पास गया।

"समुद्र के राजा ने मुझे भेजा है। उसकी एक लक्ष्मी की जान तुमने बचाई है। मुझे तुम्हें अपने देश से जाने के लिए उन्होंने भेजा है। कृपा करके मेरे साथ आओ।" उसने कहा।

"मुझे तो तैरना नहीं आता है। समुद्र राज्य में कैसे जा सकता है।" युवक ने कहा।

"तुम इस बाल के लिए न डरो। मैं वस्तुतः मछली हूँ। मेरी पीठ पर सवार हो जाओ, मैं तुम्हें वहाँ से लाऊँगा।" उसने कहा।



वे दोनों जब छुटने घर पानी में गये, तो वह भी एक बड़ी गलती बन गई, बुध्वा उसकी पीठ पर सवार हो गया। समुद्र राजा के घर के रान्ते में उस गलती ने बुध्वा से कहा—“समुद्र राजा चाहे तुमसे कोई घर उठाने के लिए रहे, तो कहना कि मन्त्रवाले कान के सिवाय कुछ नहीं चाहिए। बूढ़े-तुमने अपनी लक्ष्मी के प्राण बचाने हैं, इसलिए वह कुनजता में उसको तुम्हें देगा। जब तुम उसे कान में रखकर सुनोगे, तो सभी जातियों की भाषा समझ में आ जायेगी।

समुद्र राजा ने बुध्वा का स्तूय आतिथ्य किया। रात और रातें हुए। बुध्वा समुद्र राजा का कुछ दिन अतिथि रहा, फिर उसने कहा कि वह अपने घर वापस जाना चाहता था, तब समुद्र के राजा ने कहा—“तुम हमारे लोक में से जो चाहो, उसे मंगो, मैं मेट में दे दूँगा।”

“मुझे मन्त्रवाले कान के सिवाय कुछ नहीं चाहिए।” बुध्वा ने कहा।

“समुद्र में ऐसा एक ही एक है। फिर जो तुमने मंगा है, मैं इसलिए उसे दे देता हूँ।” कहकर उसने दा. आने में उसे कान को उठाकर उसे दे दिया। जो माछों, उसको वह लाया भी, वह ही उसको मेट पर ले गई।

बुध्वा, समुद्र के बिगारे पैदा था कि उसको कुछ बिड़ियाओं का चहचहाता सुनाई दिया। वह जानने के लिए कि वे क्या बोलें वह रहे थे, अपने कान के स्थान उस मन्त्रवाले कान को पदन में रखा। तुरन्त वह जान गया बिड़ियानों क्या कह रही थी।

“मनुष्य सोचते हैं कि वे बड़े बुद्धिमान हैं, पर वे कुछ नहीं जानते जानते।

पासवाले गले में एक पाथर है जिस पर दो कौजों का "काँच काँच" करना संग पैर टेककर सादा पार करते हैं, मुनाई दिया उसने मन्त्रवाले कान को यह शुद्ध सोने का है, परन्तु यह कोई धन में रत्नकर मुना ।

सही जानना " का कहकर, निर्दोषी " मन्त्रवाले गले में है । जाने कहीं कहीं से पैर मुलाये गये, पर एक भी

यह सुन युवक को बड़ा नाथर्य हुआ । हतान्तर ही चरों को डीक न बन वह गले में गला । वही २४ पन्थर को गला । कैसे डीक करेंगे : नर, दवा-शक उठाया : अब उसने उसके हृदय की चरों में डीक होनेवाली बीमारी नहीं है । हवा की तो वह समझनाले हवा । निर्दोषी हतान्तर के घर की धन २४ पन्थर की बाँधी में फँड़े हुए न था । ना रही थी, नो कल के साथ एक साथ

युवक भाने को जेब में रत्नकर, मन्त्र की कल गवा म, वह बूझ रहा था वह पर आश्चर्य करना था ज गला था है । अब नर फँड़े को लोकरन माना



नहीं देता, जब तक हमीन्दार की लड़की
टीक न होगी।" ये कौन्से जापस ने
बाते कर रहे थे।

यह सोच कि अच्छा हुआ उसने यह
सुन लिया था, वह सीधे हमीन्दार
के घर गया। घर के बाहर खिन्ना
था—“जो मेरी लड़की की बिकिन्ना
करेगा, जो वह चाहेगा, वह दिया
जायेगा।”

बुधक ने अन्दर जाकर कहा—“मैं
होगी लड़की की बिकिन्ना करेगा।”

यह कहकर बुधक सीधे लड़की के पास
गई। उसने बिकिन्ना कर पना न लगा सके,
वह वह मुझे टीक करने आया है।”
ये जापस में कानाफूसी करने लगे।
परन्तु हमीन्दार, जो कोई बात जाना
उसमें ईश्वर करवाना

बुधक ने अन्दर जाकर रोनी को देखकर
कहा—“यह रोग नहीं है, मान है।
जीव दिना हुई है। घर की छत पर
साँप केना पड़ा है।”

हमीन्दार ने अपने बौखारों को बुलवाकर
छत हटवायी। साँप एक बंस में था।
यह मूल के कारण मरा जा रहा था।
उसे लुहाकर दूध दिया गया। वह दूध
पीकर रेंगने लगा। जब वह एक कदम
रेता, तो हमीन्दार की लड़की भी बिस्तरे
पर उठ बैठी। जब वह दो कदम रेता तो
वह उठ खड़ी हुई। जब साँप अपने गान्ने
चला गया, तो हमीन्दार की लड़की की
बीवारी भी जाती गयी।

बुधक लड़की पर उसने ईश्वर किया
था, इसलिए हमीन्दार ने उस बुधक को
अपनी लड़की से विवाह कर दिया।





शरीर का मूल्य

उदयगिरि का राजा उदयसेन बड़ा धर्मात्मा था। राजा के मुक्त मन्त्रों के लिए, उसने बहुत-सी व्यवस्थाएँ की। किसी को भी शील मँगाने की कोई जरूरत न थी। राजा के इस प्रचार करने से, राज्य में शील मँगाना बहुत कम हो गया था।

उस देश के भिक्षारिजों में एक युवक था। जब से उसने होश सम्पादित था, उस से वह शील मँगाकर ही जीवन निर्वाह करता आया था। भिक्षारिजों को लोगों ने देना कम कर दिया था, इसलिए होने होने, उनकी अपनी स्थिति बड़ी कठिन मान्य होने लगी।

एक दिन सुबेरे से दुपहर तक, किसी ने उसको कोई शील न दी। भूखा, वह राजमार्ग के एक पेड़ के नीचे बैठकर, आने

आनेवालों से शील मँगाने लगा। पर किसी ने उसकी ओर न देखा। भगवान की प्रार्थना करने से ही शायद लोगों की नजर उस पर पड़े, वह मोचबल, वह गला पकड़कर चिलाने लगा—“हे भगवान, गरीब को मुट्ठी भर दान, जामुनके, मूले की एक पीर भज, दूधामे, अनाम के कुछ दान....”

तब भी किसी ने उसकी न सुनी। भूखा, तो था ही भिखा-भिखाकर, वह बेदोश भी होने लगा। उसे भगवान पर गुस्सा आया। “अरे भगवान! क्या कर रहे हो। कहते हैं, जो पैदा करता है, क्या वह मरने को नहीं देगा। पैदा किया है, क्यों नहीं खिलाते हो। तैरी माँ का पेट खले...” वह भगवान को ही मालियाँ देने लगा।

उसी समय राजा, राजमार्ग से होते पर
महाराज होकर जा रहा था। उसने भगवती की
बाल सुनी। बोले को रोका। स्नाह,
सोफे पास रहकर पड़ा। "बिने के लालिका
दे रहे हैं।"

"हैर बिने, पादिका व. हैर रम
महाराज को ही।" भगवती ने कहा।

"बि, महाराज की को पता चली
नहीं, वह कोते उसे के लालिका देना
है। महाराज ने उसे क्या बिगाड़ा है।"
राजा ने कहा।

"कोर क्या खेला। वह से उठा है,
जैसे कुछ खाने को नहीं है। बिने का
ने सोच बना रहा है, वह कोते एक केला
को मर देना है।" भगवती ने कहा।

"बि, तुम देना ही चाहते हो, तो के
देना है। मैं हम देना पर मर रहे हैं। तुम

एक दूध मुझे दे दो, मैं तुम्हें दूध पर खाने
दूना। मर तो दूध पर दो, मैं तुम्हें
ही दूध पर खाने दूना। अपनी बालि देने,
को मर दे दूना।" राजा ने कहा।

"तुम मेरा पैसा नहीं चाहिए। मैं
कुछ भी न दूना।" भगवती ने कहा।

"बि, तुम बहुत विस्मयवर्ती हो।
तुम्हारे पास एक दूध के अक्षर, बिनी
दूध, दो दूध से अधिक पैर, वह दूध
में भी अधिक विस्मयवर्ती को मरने है।

तो देना है, इसलिए महाराज को पता
चले। को मरिवा देने दो, रम। लालिका,
महाराज के बिने हुए दूध पर के कुछ
को, मर, पता को और जीवो।" राजा
उसे महाराज पर मर। रम में उसने
सोच बना छोड़ दिया और महाराज करके
मरना सोच छोड़ करके चले गया।





मूर्खता भरी आज़ा

आठवीं कक्षा में एक छात्र था। उसके

सारा में एक लड़का था। बूँक साठ वर्ष के बड़े विद्वान् ज्ञान नहीं जाने थे। उनसे बहुत-सी बातें सीखीं। वह साठ साठ वर्ष के बड़े थे उनके एक घर के एक घाटी के जंगल में जाकर छोट करे। वह आजा था। राजा की आज्ञा का पालन वाचस्पति था। इसलिए एक साठ वर्ष के बड़े होने ही अपने पिता से जो उस घाटी में छोट करे। १० घाटी का नाम ही "वृद्धपति" पर रखा। बने उस घाटी में कुछ दिन तो 'विद्वान्' रहने। फिर पर जरा जाने एक बड़े के साठ साठ वर्ष के बड़े। आजा के अनुसार एक लड़का अपने पिता

को अपने घर खाने का घाटी में छोट करे के लिए विवश। एक ने वाचस्पति साठ से जंगल के लगे में बने। तो ऊपर बैठा बड़ा जो जो दृष्टिगत उसके साथ लगती उन्हें संतुष्ट कर देता था।

"क्यों इन्हें छोट करे हो। क्या मैं विद्वान् छोट करे हो, नाकि वाचस्पति जाया जा सके।" लड़के ने कहा।

"नहीं बेटा, कहीं ऐसा न हो तुम जाते। जाने सारा कुछ जाये।" पिता ने कहा।

किन्तु पिता का उस पर इतना प्रेम था, अपने घाटी में छोट जाने के लिए जिस न माना। वह वाचस्पति के साथ पिता के घर वाचस्पति ने आया। आठवीं पर उसे सब उसकी देखने मारने लगा।

राजा की मूर्खतापूर्ण आज्ञा लोगों को ने कहा कि जो आने कहा था, उसे बड़ी बुरी लगी। वे लोग भी इस आज्ञा पर विरोध करने लगे, जिनके पिता अभी साठ के नहीं हुए थे। यह देख मन्त्री ने राजा से कहा—“महाराज, आपकी आज्ञा के अनुसार देश का कितना अधिक बर्बाद हुआ है, यह तो नहीं कहा जा सकता। ज्ञान और अनुभववाले सब अच्छा मर रहे हैं, जो युवकों को ठीक रास्ते पर ले जानेवाले नहीं रह गये हैं। इसलिए, बड़ी हानि हो रही है।” राजा ने इस बात का विश्वास नहीं किया। मन्त्री

ने कहा कि जो आने कहा था, उसे वह सिद्ध करके दिखावेगा। उसकी सलाह पर राजा ने एक घोषणा करवाई। राज्य में हर किसी को रात में बनाई गई रस्सियों को आने के लिए कहा गया।

रात की रस्सियाँ कैसे बनायी जायें? किसी भी नागरिक को न पता लगा। उस युवक ने जिसने अपने पिता की आदारी पर कुत्ता रखा था, उससे पूछा—“राजा की आज्ञा हुई है कि रात में बनाई हुई रस्सियाँ लाई जायें, यह कैसे सम्भव है?”



“रस्मी को जमान राज को बन करवाइये।” मन्त्री ने नागरिकों को देकर उसे वैसे ही ले जाकर राजा को एक और परीक्षा दी।

दिसा था “पिता ने मजबूत दी।

“देश के सभी नागरिक, शत्रु के कोने

उमने पिता के बड़े अनुसार रस्मी में से राजा निकालकर राजा को लाकर जमान, राजा को जाकर दिखायी। राज्य दिखाये।” घोषणा की गई।

मे वह कार और कोई न कर सक्त।

यह पिता जरा किया जा सकता था,

“बाह. तुम बड़े महामन्द हो।” राजा कोई न जान सक्त। उस युवक में, जिसने पिता को चुना रखा था, फिर पिता से सक्त मंगी।

“बाह. तुम बड़े महामन्द हो।” राजा

मे उसकी प्रशंसा करके उसको मेज दिया

फिर उसने मन्त्री से कहा—“देखा, महामन्त्री कौन से ही नहीं, युवकों में भी है।

“यह जानने के लिए कि यह महामन्त्री युवक की थी कि नहीं, एक और घोषणा की गई थी कि नहीं, एक और घोषणा

“बेटा, एक छोटे से चावल की एक फले लाने से बांध दो और उसे एक बांटी को दे दो। फिर उसे शत्रु में डाल



दी : वह शंस के छेद में से बाबल के साथ बाहर निकल आयेगी। बाबल का साम्रा भी बन जायेगा ; फिर बाबल को तामे से शंस देना और शंस को ले जाकर राजा को दिला आना ।" पिता ने गह्रा ।

युवक ने जैसे पिता ने कहा था वैसे ही किया। तामे के कण लम्बे शंस को ले जाकर राजा को दिलाया, जिसका उसके कोई और मत करके न गया था। राजा युवक को देखकर बड़ा खुश हुआ।

"मगर क्या उद्विग्न, महाराज यह ही राज्य की रस्मी आज था, ये दोनों कान हमारे ऊपर जड़ों से किये हैं, ये वह शंसों के लिए तैयार नहीं हैं।" राजा ने कहा।

राजा ने जब पूछा कि तो युवक ने क्या कहा दिया।

"महामु, मेरा पिता बहुत अहमद है। मुझे बड़े पैसों से देखा था। परन्तु उसको साठ वर्ष होने ही, मैं "पश्चि पति" पारी में होने गया। कभी पश्चिमी रस्में हैं बहुत न जाने, ये साम्राज्य उद्विग्न होकर टूटने लगे। यह देना मैं उन्हें पारी में न होने गया और उनकी पर लाकर उनकी रक्षा कर रहा हूँ। उनकी गलत पर ही मैं राज्य की रस्मी कराया था, और जब शंस में छेद करने का उपाय भी उन्होंने बताया था।" युवक ने कहा।

यह सुनते ही राजा पर अनीन हुआ। उसी दिन उसने अपनी आज्ञा रुक कर दी। तब से "पश्चि पति" को पुनर्जन्म समझकर अमरपूर्वक स्थापित किया है।





पाँच मूर्ख

कुम्भनी नगर के राजा के सर जाने के

बाद उसके लड़के मेधावन्त ने अपना राज्याभिषेक करवाया। वह राजा बन गया, नाम ही मेधावन्त था। जैसे वह था विरा मूर्ख। उसका बचन का एक निब था, जिसका नाम सुबुद्धि था। वह भी अपने नाम के अनुरूप न था। क्योंकि उसमें भी बुद्धि न थी।

मेधावन्त की मुख्य राभी अपने नाम के अनुरूप थी। उसका नाम सन्देही था और उसे हर बात पर सन्देह होता था।

सुत राजा के एक समर्थ मन्त्री था। उसका नाम गुणपाल था। मेधावन्त के राजा होते ही, उसने सोचा कि राज्य के अच्छे दिन, अच्छी परम्परामें सब सुत राजा के साथ ही बने गये थे। गुणपाल ने

अपने मन्त्री पर से त्यागपत्र दे दिया। वहीं दूर एक जंगल में एक आश्रम बनाकर उसमें भगवान का ध्यान करता निश्चिन्त रहने लगा।

गुणपाल का बड़ा ब्राना मेधावन्त के लिए अच्छा था। यदि गुणपाल का मन्त्री रहता, तो वह अपनी इच्छानुसार कुछ न कर पाता। उसने अपने बाल निब, सुबुद्धि को मन्त्री बनाया और वह मनमानी राज्य करने लगा। राजा मन्त्री निकलकर जो काम करते उस पर दरबारी पात्र हंसा करते। उनकी बेमञ्ची पर वे उनकी पीठ पीछे हंसा भी करते।

एक रोज जब मेधावन्त घर पहुँचा, तो उसकी वही सन्देही एक सन्देह लेकर वृत्ति के सामने आयी।



“क्यों भी मूर्ख किन्हे कहते हैं ? वे कैसे होते हैं ? जब आप दरबार में थे, तो किसी का “मूर्ख” और “मूर्खी” कहकर कोसना सुनाई दिया।” सन्देशी ने कहा।

“मूर्ख तो, मैंने बहुत बार सुना है। पर मूर्ख कैसे होते हैं, वह मैंने नहीं देखा है। वह बात सुबुद्धि से पूछो, वह बतायेगा।” मेधावन्त ने कहा।

अगले दिन दरबार में सुबुद्धि को देखते ही मेधावन्त को सन्देशी का सन्देश कह ही जाया। उसने सुबुद्धि से कहा—

“महामन्त्री, जो मूर्ख कहलाये जाते हैं, वे कैसे होते हैं, मैं वह जानना चाहता हूँ, बताओ।”

“महाराज, मैंने भी मूर्ख और मूर्खी शब्द तो सुने हैं। पर वे कैसे होते हैं ? वह कभी मैंने नहीं देखा है।” सुबुद्धि ने कहा।

“अच्छा, तो तुम्हें सलाह दूँ कि वह समय देना है। इस बीच कहीं ने पाँच मूर्खों को एकदफर लाओ। वे कैसे होते हैं, हम सबकी देखना है। इस समय में यदि तुम पाँच मूर्खों को न लाये, तो तुम्हारा सिर कटवाकर कछोड़ी पर लटका दिया जायेगा।” मेधावन्त ने कहा।

सुबुद्धि वह सुनकर डर गया। मूर्ख कैसे होते हैं और कहीं रहते हैं, वह नहीं जानता था। इसलिए वह वह भी न जानना था कि वे कहाँ रहते थे। यदि पड़िसा मन्त्री मुखपाल होता, तो वह काम मित्रों में कर देता।

मुखपाल का नाम याद आते ही, सुबुद्धि की जान में जान आयी। तुरत वह सरणी की बिना दरबार किने,

मुलपाल को देखते निरुत्तर रहा। उसके आग्रह में यहूदकर मुलपाल को भारी बात बतायी। “इस रात मुन्नी को डूबने का काम आज ही को करना पड़ेगा, नहीं तो मुझे मार दिया जायेगा।” का उसके पैर पड़ा।

“कोई बात नहीं बेदा, मैं भी तुम्हारे साथ बच जाऊँगा। इसे तो मुन्नी चाहे, माफ़ दे रातों में ही निरुत्तर ज्यों।” यहूदकर मुलपाल मुन्नी को साथ लेकर राजधानी की ओर चल पड़ा। जब वे एक आम पहुँचे तो उन्होंने देखा कि

एक धा एक तरफ़ से चल रहा था और परबाने का पाँच, इस लोगो को आम बुझाने के लिए बुझाना तो जलन वह मकान के दूसरी तरफ़ गेल बात रहा था।

मुलपाल ने उसे देखकर पूछा—“जब अब धा एक तरफ़ जका जा रहा है, तो दूसरी ओर भी क्यों जाता रहें तो?”

“क्यों में इनका भी नहीं जानता। साथ बड़े मजदूर नज़र दीने हैं। करने हैं, ऊपर अपने ही ज़िन्दगी—यदि आज में आम मिला दी गई, तो जलना सतम हो जायेगा।” परबाने ने कहा :





“और साह, क्यों एक कुँये से पानी निकालकर, एतरे कुँये में डाल रहे हो !” मुखपाल ने पूछा ।

इस पर उस आदमी ने कहा—“और क्या किया जाये ! इस गरमी के कारण हमारे घर का कुँआ सूख गया है । मेरी पत्नी बड़ी आलसी है । पानी खाने के लिए घर से बाहर नहीं आयेगी । इसलिए और क्या करूँ ! दूर के कुँये से पानी लाकर, घर के कुँये में डाल रहा हूँ ।”

“हम राजधानी जा रहे हैं । क्या हमारे साथ जाओगे ! राजा से तुम्हें अच्छा इनाम दिलवायेंगे ।” मुखपाल ने कहा ।

वह आदमी भी इसके लिए मान गया और उनके साथ चल पड़ा । जब ये राजधानी के पास आने लगे, तो सुबुद्धि ने मुखपाल से पूछा—“हम दो मूर्ख ही तो से जा रहे हैं—राजा ने तो पाँच बूजों को खाने के लिए कहा था ।”

“इतनी बड़ी राजधानी में बूजों की क्या कमी है ! बाकी हमें कहीं मिल जायेंगे । पाँच बूजों को राजा को दिखाना मेरी जिम्मेवारी है...टीक !” मुखपाल ने कहा ।

“हम राजधानी की ओर जा रहे हैं, क्या हमारे साथ जाओगे—तुम्हें राजा से इनाम दिलवा देंगे ।” मुखपाल ने कहा ।

पर अलनेवाला इसके लिए मान गया और उनके साथ निकल पड़ा ।

तीनों चलते-चलते एक और गाँव में पहुँचे । वहाँ एक आदमी, अपने घर से कुछ दूरी पर के कुँये से पानी लाकर, अपने आँगन के कुँये में डाल रहा था—लाफट वह अपना कुँआ, घूँबरना बाहुरा था ।

दोनों मूर्तों को साथ लेकर सुबुद्धि और
गुणचाल राजा के दरबार में पहुँचे।

मेधावन्त ने सुबुद्धि को देखकर कहा—
“अरे, इतनी जल्दी आ गये। पाँच मूर्तों
को लाने की कहा था, मगर तुम तो तीन
ही लाये हो। अरे, वे पुराने मन्त्री ही माहस
होते हैं। क्या वे भी मूर्त हैं?” दरबारी
सब हँस पड़े। सुबुद्धि ने खबरते हुए कहा—

“महाराज, मैं उनकी छाया से इन दो
मूर्तों को पकड़कर लाया हूँ।”

“अगर तीन और मूर्त नहीं लाये हैं,
तो क्या इसके लिए इनका साथ कटवा

दिया जाये—क्यों?” मेधावन्त ने गुस्से
में पूछा। “महाराज आप जिन पाँच मूर्तों
को देखना चाहते हैं, मैं उन्हें दिखाता हूँ।
पड़िते इन दोनों के बारे में तो सुनिये.....”
कहकर, उसने घर जलनेवाले के बारे में
और पानी काफ़र कुँबे में जलनेवाले के
बारे में सन्वित्तव बताया।

जब वह उनकी मूर्तता के बारे में
कहा रहा था, तो दरबारियों ने तालियाँ
पीटकर मज़ास किया।

मेधावन्त को यह बिलकुल न अच्छा।
उसने गुणचाल से कहा—“सैर, इनकी बात



हो : कीजिए । बाकी तीन मूर्तों को, मूर्तों ही दिलाइये ।”

“इन तीनों को आप जानते ही हैं । आपने कहा कि तीन मूर्तें एक ही स्तंभ और वह टीक उठाने न दें, प्राचा और स्वयं मूर्तों को श्रद्धा भी न पाया । मेरी कल्पना : मूर्तोंवाला आपका महामन्त्री ही एक मूर्त है । आपकी रानी एक और मूर्त है, जिन्होंने यह पूछा था कि मूर्त कैसे होते हैं और उसके पूछने पर जिन्होंने अपने महामन्त्री को मूर्तें छेड़कर लाने के लिए ही न कहा, बल्कि यह धमकी दी कि अगर वे एक सप्ताह में न लाये मूर्तें, तो फिर बटका होगा, उनसे बड़ा मूर्त इस संसार में कोई न होगा ।” गुणपाल ने कहा ।

यह जब वे एक एक साथ गिनता जाता था, तो दरबारी तालियों पीटने लगे थे ।

फिर उन्होंने “महामन्त्री गुणपाल की जगह” का जयजयकार किया ।

मेधावन्त को गुणपाल की बात सुनकर बड़ा मुस्का आया । पर वह देख कि दरबारियों ने उनकी तरह, उनकी पत्नी और मन्त्री को भी मूर्तें करार दिया था, बुरा जल्द कर, उसने कहा—“आपने जो कहा है, उसे कुछ सचाई जरूर है । मैं मानता हूँ कि आप फिर मन्त्री पद स्वीकार करें और मुझसे टीक सार राज्य करावाये ।”

“मैं मान्यमन्त्री हो गया हूँ । मैं क्या करूँगा इस मन्त्री पद का । यह जानना छोड़कर कि मूर्तें कैसे होते हैं—यह जानिये कि मूर्तता क्या होती है और इस भयानक राज्य कीजिए कि मूर्त सुखी हो ।” घर बहकर, गुणपाल अपने मातम चला गया ।





रास्ते में प्यास

एक बार पञ्चालाल जहाँ रहता था, वहाँ एक पक्षी की मरनेवाली बीमारी फैलने लगी। वो रोज बच्चे न कुछ खाते, न खेलते कूदते ही, बंके से बंके रहते। तीसरे दिन ज्वर आता। और तीन दिनों के ज्वर के बाद बच्चे मर जाते।

इस ज्वर की चिकित्सा करनेवाला वैद्य उस गाँव में कोई न था। दस मील दूर सिवपुर में रहनेवाले चक्रीय भान का वैद्य जान ज्वर की चिकित्सा कर सकता था। पर उस वैद्य को लाने में खर्च अधिक होता था। जो वह खर्च न उठा सकते थे, वे बच्चों को सिवपुर ले जाते, वैद्य को दिखाकर दवाई ले जाते। बच्चों को बिना देखे, वैद्य दवा न दिया करता था। ज्वर आने में पहिले ही चिकित्सा करनी होती

थी। ज्वर आने पर किसी दवा का असर न होता था।

एक दिन ऐसा लगा, जैसे पञ्चालालों के लड़के को ज्वर आनेवाला हो। पञ्चालाल की पत्नी ने तुरत बच्चे को चक्रीय के पास ले जाने के लिए कहा। परन्तु उसके पास उस समय अपनी गाड़ी न थी। किसी और को अपने बच्चे को वैद्य के पास ले जाना था उसको पञ्चालाल ने अपनी गाड़ी दे दी थी। इसलिए पञ्चालाल ने वैद्य को अपने घर बुलाकर बच्चे को दिखाना चाहा।

इतने में पड़ोस के सोमलाल ने अटक कहा—“पञ्चालाल जी हमारे लड़के को वह ज्वर जाला माक्स होगा है। वैद्य के पास ले जाकर उसे दिखाना है। क्या अपनी गाड़ी बरा दोने?”



पञ्चालाल ने कहा कि उसके सामने भी वही समस्या थी। “तो चलो, बैच को ही बुझा लेंगे।” सोमलाल ने कहा।

पञ्चालाल भी खुश हुआ कि उसकी साथ मिल गया था। दोनों शिष्टपुर की ओर चले। कुछ दूर जाने के बाद सोमलाल ने कहा—“यदि हम सड़क बंदक करें, तो दस मील का फासला है। यदि पहाड़ की चढ़ाई से हमें दो मील बन होंगे।”

“तो चलो, चढ़ाई से ही चले।” पञ्चालाल ने कहा।

इसने मैं सड़क पर एक थोड़ा गाड़ी उनकी चार करके लेनी से गई। उसे एक चुपचाप चला रहा था। एक चुपचाप गाड़ी में बैठी थी। गाड़ी ज्यादा दूर न गई थी कि रुक गई। गाड़ी में बैठी थी चिन्ताई—“मदद करो, मदद करो।” वह शान्त निर्जन-सा था। दूरी पर कुछ शीर्षदियाँ थी। आर्त्तनाद सुनते ही पञ्चालाल गाड़ी की ओर जागा और सोमलाल उसे देख लिया। पञ्चालाल ने जाकर जो देखा, तो गाड़ी हाँफनेवाला चुपचाप लगान छोड़कर गाड़ी में झुककर, छाती पकड़कर कराह रहा था। “प्यास, प्यास।”

“मेरे मेरे पति हैं। पकड़कर लबीकस्त बिगाड़ गई। चलने समय जो भोजन किया था शायद उसमें कोई मराबी थी। पेट रूई बनाया। प्यास मिटाने के लिए लोटे में मैंने पानी रखा। पर गाड़ी दिखी और सारा पानी नीचे दुलक गया। यही नहीं गाड़ीवाले से झगड़कर लंबे गाड़ी बल्लाते आ रहे हैं। यदि यह होता, तो थोड़ा पानी ले जाता। आप जरा इस लोटे में मेहरबानी करके पानी ला दीजिये। कभी आपका पहचान न भूलूँगी।” गाड़ी में बैठी थी ने पञ्चालाल से कहा।

“हमें जल्दी जाना है।” सोमलाल ने उसकी राह दिखाया। परन्तु पन्नालाल ने उसकी न सुनी और खेड़ा लेकर दूर दिखाई देनेवाले मन्दिर की ओर भागा।

“बाह, तुम्हारे साथ क्या क्या जाऊँ है।” वह सोचकर सोमलाल ने कहा, “अच्छा तो मैं जा रहा हूँ।” वह वह कहकर पगड़प्पी पर चढ़ दिया।

पन्नालाल बाग की तरह भागा भागा गया। पूजारी के घर से पानी लेकर गाड़ी के पास वापिस आ गया। मुला की लबीकल पानी पीकर कुछ सुखी। परन्तु उसका पैर दर्द कम न हुआ। उसने गाड़ी में ही बैठकर कहा—“अब मैं गाड़ी नहीं चला सकता।” वह शिवपुर जमीन्दार का लड़का था। वह अपनी पत्नी की उसके माथे से अपने घर ले जा रहा था।

“आप आराम कीजिए। मैं गाड़ी हीफकर आपको घर पहुँचाकर फिर अपना काम देखूँगा।” पन्नालाल ने कहा।

“इससे बड़ी आरका काम तो नहीं बिगड़ जायेगा।” छोटे जमीन्दार की पत्नी ने पूछा।



“मैं शिवपुर में रहनेवाले चक्रीय के पास ही जा रहा हूँ। मेरे लड़के को शावर बिज लाने हो गया है।” पन्नालाल ने कहा।

“हम भी चूँकि शिवपुर जा रहे हैं। इसलिए आपको कोई असुविधा न होगी।” उसने कहा। पन्नालाल तेजी से गाड़ी चलाकर शिवपुर गया और गाड़ी जमीन्दार के घर रोकी। जमीन्दार का लड़का पत्नी के साथ गाड़ी से उतरा और उसने एक नौकर को बुलाकर कहा—“इन्हें चक्रीय के घर से जानो। बैप को इनके साथ इनके घर ले जाओ और वहाँ काम खतम

हो जाने पर फिर बैच को उनके घर छोड़कर भागी।"

उसी गाड़ी में पन्नालाल बच्चू बैच के घर गया। जमीन्दार की गाड़ी अपने घर के सामने खड़ी देख, बैच भागा भागा आया। पन्नालाल का काम जानकर रोमियो को कुछ देर ठहरने के लिए कहा, का गाड़ी में पन्नालाल के साथ निकल रहा। बैच के जाने के कुछ देर बाद सोमलाल भका बोधा बहू पहुँचा। राने में उसे डोकने लगी। कई देर गुन गये और अब वह हलने वह उठाकर पहुँचा, तो सुना कि बैच का में नहीं है और वे गाड़ी में खड़ी गये हैं। उसके जाने की हलतार करता सोमलाल बहू बैठ गया।

इस बीच बैच पन्नालाल के घर पहुँचा। उसके लड़के को देखा। दवा दी। मोहन

आदि के बारे में बताया। फिर पन्नालाल बैच को सोमलाल के घर ले गया। उसके लड़के की भी चिकित्सा करवायी। बैच को जो कुछ देना देना था, उसने स्वयं दिया।

काम होने ही बैच, जमीन्दार की गाड़ी में अपने घर आ गया और फिर उसने गाड़ी जमीन्दार के पहाँ भेज दी।

सोमलाल ने उसे देखकर अपने गाँव और काम आदि के बारे में बताया।

"मे अभी तुम्हारे गाँव से आ रहा हूँ। उनकी लड़के और आपके लड़के को भी दवा देकर आ रहा हूँ।" बैच ने कहा।

सोमलाल ने सोचा कि पन्नालाल को छोड़कर जाने के कारण उसे अच्छी सजा मिली थी। वह पैर पसीटता पसीटता आधी रात के समय अपने घर पहुँचा।





योग्यता की परीक्षा

मालव देश का राजा, हर साल हुम्नाम लेता, राजकर्मचारी के रूप में शिक्षा देने के लिए आवश्यक युवकों को चुनता, अपनी बीकरी में ले लेता और उनको मन्त्री, कोषाधिकारी, नगर सङ्ग्रह, न्यायाधिकारी और सेवापति के बीसों काम सीखने के लिए व्यवस्था कर देता। कानूनम में वे युवक, बड़े-बड़े पदों पर आ जाते। परीक्षाओं, गणित, गणित, तर्क, आदि शास्त्रों और अन्य विषय में भी की जाती।

एक साल, राजा ने अपने महान काम सिखाने के लिए दो युवकों को चुना। एक का नाम विजय था और दूसरे का नाम विमल था। दोनों नीति शास्त्र और तर्क शास्त्र में समान ज्ञान रखते थे। इसलिए युक्ति और सीतिका ज्ञान में, बीस अधिक

जगड़ा था, वह जानने के लिए मन्त्री ने उनको एक परीक्षा दी।

उम्मे विमल और विजय को, एक एक टोकरी दिया और दोनों को, एक एक गांव जाने के लिए कहा और उनसे ताकीद की कि वे फलाने फलाने अन्तर्गामी को वे दे दें और उनसे उनकी समीक्षा ले ले। उम्मे यह भी कहा कि वे गांव उतने दूर न वे।

मन्त्री के काम पर, विजय और विमल अलग-अलग रास्ते पर गये।

विमल, मन्त्री के बताये रास्ते पर दुपहर तक चलता रहा। जिन गांव में पहुँचना था, वह जो खर आया ही नहीं, उस रास्ते में और कोई गांव भी न आया और पूरा गवनी आ रही थी। घर में मूल सम



रही थी। सौभाग्य से उसे रास्ते के पास एक बागड़ी दिखाई दी। वह उसमें उतरा। ठंडा पानी पीकर, हाथ सुँढ़ भोकर, ऊपर जाकर, एक पेड़ के नीचे बैठकर, वह सोचने लगा कि क्या किया जाये।

इतने में, उसे रास्ते पर कोई जाता दिखाई दिया। उसने उससे पूछा कि कहीं गाँव कितनी दूर था। सूर्यास्त तक पहुँच जाओगे, उसने बताया, जब उसने पूछा कि पास कोई गाँव था? तो उसने कहा नहीं।

बिमल को मन्त्री पर गुस्सा आया। जब एक दिन के दूरी के गाँव में जा है, तो रास्ते में क्या उसकी योजना की व्यवस्था नहीं करनी थी! वह सोच कि कहीं उसका योजना भी टोकरे में न हो, उसने टोकरा लेकर देखा।

उसमें कुछ मटरियाँ थी, उस पर एक कागज था, उस पर वह लिखा था।

“इस टोकरे में ३०० मटरियाँ हैं। इसकी मालि की गृहना कीजिए।”

बिमल ने वह सोच कि कहीं ये अधिक न हो, उसको गिनकर देखा, तीन सौ ही थे, एक भी अधिक न था।

“जो मन्त्रणा की शिक्षा ले रहा है, क्यों उसको मटरियाँ बोलने का काम देता है वह मन्त्री! वह तो निष्ठता भी नहीं जानता।” सोचकर बिमल टोकरे में से पन्द्रह मटरियाँ लेकर ला गया। बिमल का कन्हाल था कि अगर रास्ते में मूल से पन्द्रह मटरियाँ माली, तो क्या मन्त्री उसका बला भोट देगा।

मूल के मिट जाने पर, यकालन दूर होने पर बिमल चलता-चलता, उस गाँव में पहुँचा, जहाँ उसे पहुँचना था। मन्त्री ने

जो मठरियाँ बेची थीं, उनको वहाँ देखकर, उसने ३८५ मठरियों की रसीद लेकर चला आया।

दूसरे गाँव के सिद्ध जो निकला था, वह विजय भी दुपहर तक चला रहा। जब उसे याद आया कि वह शाम तक उस गाँव तक न पहुँच सकेगा, तो उसके सामने भी गुस्सा बनी समस्या आई।

उसने सोचा कि मन्त्री का भोजन के बारे में कुछ न बताना भी शास्त्र परीक्षा का एक अंग था।

विजय ने भी विमल की तरह, वह सोचकर कि शास्त्र अपना भोजन टोकरे में ही था, टीकरा खोलकर देखा। उसने भी वही जगह था—३०० मठरियों बेची जा रही हैं, इनके मिलने की रसीद है; टोकरे में मठरियाँ जब गिनीं, तो उसमें ठीक ३०० मठरियाँ थीं। एक भी ग्राहक न था।

विजय जड़मन्द था। उसने एक एक मठरी निकाली और उसके ऊपर वह नाम छोड़कर, बाहर रखने लगा। जब उसको इस तरह कपड़ी मठरियाँ मिल गईं, तो उन्हें खाकर, रास के ताकड़ में पानी



पीछर—फिर बल्लभ-बल्लभा सम्पन्नमान पर मटरियों की रसील देस बहु सुख पहुँचा। जिनका देना था, उनको दोफारे हुआ। फिर भी उसने उनके बीचिक देख, रसीद ले ली कि ३०२ मटरियों ज्ञान को जानने के लिए एक और मिली थी। जिनके के साथे हुए जब मैं परीक्षा रखी।

२८५ मटरियों की रसीद ही थी।

“अच्छ मटरियों बना हुई।” मन्त्री ने विन्त से पूछा।

“रामने मैं मुझे भूल लगी और मैंने अपने मन के नीर पर उनकी के किया।” विमल ने कहा।

“बना लेने में कोई गलती नहीं है।” मन्त्री ने कहा। विजय की नीन सी

उसने उनके लिए दो बादल तैयार करवाये और उनमें दो पात्र रखवाये। फिर विमल और विजय को बुलाकर कहा—

“दोनों बाहनों में दो दो पात्र हैं। दोनों में ही राज है। इसमें मैं एक पात्र जयन्ती राजा को और दूसरा पात्र भंग

राजा को देकर हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का और दृढ़ करके आओ।”



विमल ने भंग राज्य और विजय ने
जबन्ती जगह जाने का निश्चय किया। विमल
भंग की राजधानी में गया और उसने यह
बतलाया कि मालव राज्य से वह भेंट लेकर
आया था, राजा के दर्शन किये। उसने
राज्य का चित्र उसके सामने रख दिया।

“क्या है यह।” भंग राजा ने पूछा।

“राज्य.....” विमल ने कहा।

“इस बीच को कैद में डाल दो।”
राजा चिन्ताग्रस्त। मन्त्री ने राजा को रोका।
मन्त्री ने उसकी परीक्षा के लिए ही यह
उसे बताया कि विमल को यह चित्र
कई दिन काम सौंपा था। इसलिए उसने
देनेवाला मालव का मन्त्री था और यह

वही परीक्षा के लिए आया हुआ था यह
जानकर विमल ने कहा—“तुम अपने
पात्र को लेकर चले जानो। मन्त्री से कहना
कि हमने उसे लेने से इनकार कर दिया है।”

विमल की जान जाते जाते बची। वह
जल्द गाड़ी पर सवार हो गया और राज्य
का चित्र लेकर वापिस चल पड़ा।

इस बीच विजय भी जबन्ती राजा के
पास गया। वह जल्द ही जान गया कि
राजा चिन्ताग्रस्त। मन्त्री ने राजा को रोका।
मन्त्री ने उसकी परीक्षा के लिए ही यह
उसे बताया कि विमल को यह चित्र
कई दिन काम सौंपा था। इसलिए उसने
देनेवाला मालव का मन्त्री था और यह



का पात्र, जिस प्रकार भवन्ती के राजा को भेंट करेगा।

भवन्ती राजा ने वमनकार करने कहा—

“महाराज, मैं मालव देश से एक छोटी भेंट लाया हूँ। हमारे राजा और मन्त्री ने अपनी मंगल कामनाओं सेबी हैं। और इस पात्र के भस्म को आपको देने के लिए कहा है। हाल ही में हमारे राजा ने काली बाबा की और बड़ा यज्ञ किया। यह उस यज्ञकुण्ड की भस्म है। यह भस्म मृत जंतुओं का निवारण करेगी। आपको और आपकी मजा को स्वास्थ्य और ऐश्वर्य प्रदान करेगी। आपने और उन्में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बढ़े, इस दृष्टि से आपके पास यह भेंट भेजी है।”

भवन्ती राजा बड़ा खुश हुआ। उसने उस पात्र को अपने अन्तःपुर में भेंट दिया।

विजय का उसने आश्रय किया और जब वह वापस जाने लगा, उसके लिए मालव के राजा और मन्त्री के लिए बहुत-से उपहार भेजे।

बिगड़ तब तक राजा का पात्र लेकर वापस आ गया था। उसने मन्त्री को देखकर कहा—“यदि राजा की नौकरी इतनी दिक्कतों और कठिनाइयों से भरी है तो मुझे छोड़ दीजिये।” यह कहकर वह अपने गाँव चला गया।

फिर विजय ने जाकर राजा और मन्त्री को भवन्ती राजा के दिने हुए उपहार दिने और बताया कि कैसे वह सच्चिदानन्दक वरम कर आया था। फिर उसने पूछा—

“महामन्त्री! अब और क्या परीक्षा है?”

“कोई नहीं, आज ही तुम नौकरी में आ सकते हो।” मन्त्री ने कहा।





युद्धकाण्ड

सुग्रीव ने कुम्भकर्ण का काट कैसा

काटकर, एक ललाट में राम के पास
बसा रखा, जो कुम्भकर्ण मृत से जगद्वज्र
के बराबर हो तरह बड़ा देव गदा म्हा विर
बुद्ध भूमि से बजा गया। इसे जाने जाने
करकर गया कि उसके हाथ से कोई
दाँवनार न था। इसे मरने में एक
मलकर लुटाकर के लिया।

बुद्ध भूमि से वह मरने में हो खंडे
दिएने देना, इसे लाने लगा। कुम्भकर्ण
ने यह सोच न बना कि वह राम के
साथ राक्षसों को भी निकल रहा था।

कहा राम लगे दुष्टका लाने को,
जो कुम्भकर्ण ललाट पीछा करने रक्षकों
को ललाट से काट कर गया।

जब देना ललाट में कुम्भकर्ण को
दुष्टकाया किता और राम पर जान छोड़े
परन्तु उन राक्षसों की प्रतापन ने विष्णु
वज्राद न की। वह काटने को मरना,
राम को लाने करने लगा।

राम ने एक ललाट मर कर लाने की
लातो पर गया। उस ललाट के पास
कुम्भकर्ण के हाथ से ललाट निकले
लगा। वह फिर गया।



कुम्भकर्ण फिर न उस जगह था, यह सोच सोचते में वनग की उस पर लगे होने के लिए कहा : फन्द उस वनग की कुम्भकर्ण ने चोखी थी तब कहा दिया ।

तब ऐसा सब कुम्भकर्ण के पास आये । कुम्भकर्ण दौड़ की तरह वनग ललक वन के पास आया ।

तब में जो देखकर कहा : " कुम्भकर्ण दौड़ नर । आओ, तुमने इन्द्र की आज्ञा का न, मैं इन्द्र नहीं हूँ । मग हूँ । मैं तुम्हें एक धनु में मार दगा । "

" हे जो कोई विषय नर हूँ : न कवच हूँ, न शर, न पाले, नालेन हूँ, कुम्भकर्ण हूँ । देखें, वनग सब मिलता है । उनके बाद मुझे ला आओ । " कुम्भकर्ण ने कहा ।

तब में वनग ने सब कुम्भकर्ण का कुछ न बिना मके : वे सब जो शर वरुण को मार उसके लकीरों को लगे थे, कुम्भकर्ण पर लगे गये । वह बहुत दूर तक चला गया कि वन के एक वनग से भी बचना गया ।

वह वनग ने कुम्भकर्ण पर बाणुपास का प्रयोग किया । उसके कुम्भकर्ण का पद बाण काट दिया, जिससे उसे बहुत दूर तक लाया । कुम्भकर्ण ने भी वनग का उपास बाण पीया, जो उनके जीने कई तरह वनग का मार गये ।

एक रात के नये लगे थे, कुम्भकर्ण ने जो रात के एक नरगल उठाकर वन पर दलका किया ।

तब में वनग ने कुम्भकर्ण के द्वारे रात को भी काट दिया ।

उसने फिर दो शर वनग नालों से कुम्भकर्ण के पैर काट लिये ।



उत्तम गणपतिदेव गणेश की स्तुति का
समाचार सुनकर, सभी दुःख भाग्य में उद्वेग
रहा। स्व इन्द्रिय ने अन्त रित्त ने
वैभवा गया। गणेश के गो गो
दत्त का निम्नता में सभी जानते हैं
हम लक्ष्मी के धारक माना है।
गणेश गुरुदेव सिद्ध गुरु भव।

[illegible]

दुःखभूमि में भयानक मध्य के चरणों में
राज्यों का पड़ना लगातार दुःखभूमि में मान
किता और एक काली चाली को बंद
की थी। बिना बिना के राज्य ने उद्वेग
जोकि बिना की सूचना की

[illegible]

राष्ट्रिय सेवा में अग्रगण्यता प्राप्त के
लिए युद्ध के दिनों से ही

यन्मते मरुतस्य इत्येवमेव
आश्रयः इति ।

पञ्चन गन्धर्व वीर गन्धर्वावत, नर,
 गिरि, गङ्गा, गङ्गावन्त, गङ्गावन्त, गङ्गावन्त,
 गङ्गावन्त, गङ्गावन्त, गङ्गावन्त, गङ्गावन्त,
 गङ्गावन्त, गङ्गावन्त, गङ्गावन्त, गङ्गावन्त,
 गङ्गावन्त, गङ्गावन्त, गङ्गावन्त, गङ्गावन्त,

૧૫૬ સંવત્ ૧૯૧૭ નું માર્ચ, એ એપ્રિલ મહિના
 ને આ અગાઉના હોય તે સંવત્ ૧૯૧૭ ના માર્ચ
 ને માર્ચ માં, એટલે અગાઉ ના વર્ષના માર્ચ.

१९५०-५१ का आँकड़ा १९५१-५२ के आँकड़ा से
 १९५१-५२ का आँकड़ा १९५२-५३ के आँकड़ा से
 १९५२-५३ का आँकड़ा १९५३-५४ के आँकड़ा से



मार्गे, जो दूरछे भी नहीं देता है।
अभी तो के कारण सभी पास में
हलक पड़ी है। और हम सब हिंस्रों
के मन की मर्दियाँ हैं, जो इन्द्रजित मन्त्र
देता था। अयोग्य ।”

हम अलग ही भी मर्दियाँ हैं,
इन्द्रजित मन्त्र देकर सब मर्दियाँ
नहीं हैं।

हम अलग ही मर्दियाँ हैं, अलग ही
हलक देकर भी भी मर्दियाँ हैं। उन्नी,
गुर्गाव, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं।

हम अलग ही मर्दियाँ हैं, अलग ही
हलक देकर भी भी मर्दियाँ हैं। उन्नी,
गुर्गाव, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं।

हम अलग ही मर्दियाँ हैं, अलग ही
हलक देकर भी भी मर्दियाँ हैं। उन्नी,
गुर्गाव, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं।

हम अलग ही मर्दियाँ हैं, अलग ही
हलक देकर भी भी मर्दियाँ हैं। उन्नी,
गुर्गाव, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं।

अंगद, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं। उन्नी,
गुर्गाव, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं।

अंगद, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं। उन्नी,
गुर्गाव, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं।

अंगद, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं। उन्नी,
गुर्गाव, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं।

अंगद, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं। उन्नी,
गुर्गाव, नील, अंगद, अंगद, अंगद, अंगद
मन्त्र देकर भी मर्दियाँ हैं।



कथमांगद

कुनी स्वमांगद नाम का राजा हुआ करता था। उसकी पत्नी का नाम सन्ध्यावती था। उनके एक लड़का था, जिसका नाम भमांगद था। स्वमांगद बड़ा सीधा और बड़ा विष्णुभक्त था। उसका विचार था, कि एकादशी का से सब पाप भले जाने थे। यदि अपनी राजा को मरवा के इस से बचाना है, तो एकादशी का करना ही एक मात्र मार्ग है। इसलिए स्वमांगद ने सोचना करवाई कि हर कोई उसके राज्य में एकादशी का रहे और जो न रहेगा उसको दण्ड दिया जायेगा।

स्वमांगद के इस नियम से बत्ता में नरक जाना छोड़ दिया। नरक उजड़-सा गया। चित्रगुप्त को भी काम न रहा। वह सोच ही रहा था कि वह बेकार ही

गया था इतने में नारद ने आकर कहा—
“कहा बात है, कम राजा, बड़ी चिन्ता में दूबे हुए हो।”

“नारद, देखो, मेरे लोक की क्या गति है। चूंकि स्वमांगद लोगों से एकादशी का करवा रहा है इसलिए मरझन हुआ करनेवाले भी मरने जा रहे हैं। चित्रगुप्त भी बीज रखे लाली बैठा है। मैं भी बेकार बैठा हूँ। जब काम ही न हो, तो यह फल किस काम का। मारी परिस्थिति में उस ब्रह्मा को ही बतलाना।” कम ने कहा।

नारद कम राजा को अपने पिता के पास ले गया, वहाँ दरबार में था। कम को देखकर ब्रह्मा के चालों और सबेरे लोग आरत में कामाक्षी करने लगे। कम



ऊँचे लोक मिलते हैं। जब मुझे यह मौक़ी नहीं चाहिए। अगर इसे ले लीजिये और मुझे जाने दीजिये। यह रहा मेरा दण्ड और यह रहा पाप पुण्य का तैला-बोला। जब तक वो इसने लिखा होता था, उसे कोई मिटा नहीं पाता था। पर अब यह स्वर्गांगद कहीं से आ गया है।" धन ने कहा।

यह सुनकर, ब्रह्मा ने धन को खूब फटकारा। "एकदशी मत को गेकनेवाले तुम कौन होते हो! एकदशी विष्णु का पवित्र दिन है, एक बार हरि का स्मरण करने मात्र से, इस भ्रमरेश्वरी का पुण्य मिलता है। और, यही गनीमत है, विष्णु भक्तों ने, विष्णु के विरुद्ध यह कहने पर, तुम्हें मारा नहीं—मैं, इस विषय में तुम्हारी कुछ भी मदद नहीं कर सकता।"

धन ने भी विद वक़्ती—“बाबा, जब तक मेरी मदद नहीं करोगें मैं वापिस नहीं जाऊँगा। जब तक स्वर्गांगद का राज्य है, तब तक मेरी कोई नहीं सुनेगा। अब अगर ऐसा करो कि यह मत और भिक्का के मार्ग से विचलित हो जाये। जैसे भी हो, उसका मत भंग कर दो। यदि तुमने

रोता ब्रह्मा के पैरों पर गया। सभा में सबकी मच गयी। वायुदेव ने सब को चुन रहने के लिए यह धन से कहा—
“वो तुम्हारी दुश्मनी है उसके बारे में तुम ब्रह्मा से निवेदन करो।”

“मैं व्यर्थ हो गया हूँ। मुझे अब कोई काम नहीं है। मेरी कोई परवाह नहीं करता है। जो पुण्य कटोर लक्ष्मी या यह आदि से नहीं मिलता है, वह एकदशी मत से मिल जाता है। एकदशी के दिन कुछ उपवन समाज स्नान करके यदि उन्वान किया गया, तो हर किसी को

यह किया, तो एकदशी मत उपासकों के साथ नहीं चटूँगा ।”

ब्रह्मा ने कुछ देर ध्यान किया फिर उसने मोहिनी भी की सृष्टि की । मोहिनी ने ब्रह्मा से पूछा - “मीन लोकों को मुख्य करनेवाली मुख भी को बनाने का तुम्हारा क्या उद्देश्य है ।”

ब्रह्मा ने मोहिनी को स्वर्गांगद के बारे में, उसके धजा को बनाने एकदशी निषम के बारे में और उस कारण मन की दुस्स्थिति के बारे में बताया । फिर उसने यह उपाय भी बताया, कि कैसे वह आकर स्वर्गांगद को मुख्य करे, उसका कैसे मन भंग करे ।

मोहिनी, ब्रह्मा से आज्ञा लेकर शस्त्रों से देवताओं को देखती, नन्दर पर्वत पर गई, उस पर्वत पर धजाधुप के चरण एक बड़ी घाटी-सी बनवाई थी । उसे वृष लिया कहा जाता था । यह बड़ा रथ प्रवेश था । मोहिनी वहाँ एक सघट पत्थर पर बैठकर बीजा बजानी गाने लगी ।

एक बीच स्वर्गांगद की कानधन्य जना पड़ा । कभी सम्पूर्ण जम्बूद्वीप पर उनका एक छत्र राज्य था । उसने समस्त सुखों का उत्सोग किया था । उसने अपना



सारा जीवन तो विष्णु भक्ति में बिताया ही, साथ उसने स्वर्ग में भी बीड़ कर दी । मन लोक को उजाड़-ना दिया । मन कोई ऐसी चीज न थी, जिसे वह चाहता हो । उसका लड़कर धर्मोद था । यह हर चीज में पिता की मात करता था । पिता यदि एक द्वीप का राजा था, तो धर्मोद सत्त द्वीपों का था । अति शक्तिसाली होने पर भी धर्मोद अपने पिता और मल्ला को, और पिता की रीति से पत्नियों को बड़ी बड़ा और भक्ति से देखता । स्वर्गांगद अपने सड़के का राज्याभिषेक करके उसे

भी प्रजा द्वारा एकदशी का मनाने के लिए आदेश देकर, पत्नी से बिदा लेकर, थोड़े पर सवार होकर मेरु पर्वत आया। जल्दी ही उसको मोहिनी का संगीत सुनाई दिया। तुरन्त वह थोड़े दूर से उत्तर और जिस दिशा में संगीत आया था, उस ओर भागा भागा गया और उसने मोहिनी को देखा। उसको देखते ही, उसका मन विचल-सा हो उठा। वह उसके पास जाकर गुणित-सा हो गया।

मोहिनी ने बीणा का तरङ्ग रम्बी। स्वर्नांगद के पास जाकर पूछा—“राजा, उठो, तुम तो राज्य भी छोड़कर आये हो। फिर मुझे देखकर, कैसे इतने मुग्ध हो गये। यदि तुम मेरे साथ प्रेमना चित्रना चाहो, तो मेरे नियमानुसार यौनिक मेरे साथ रहो।”

वह सुनते ही स्वर्नांगद बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने मोहिनी से कहा—“मेरी कई सुन्दर स्त्रियाँ हैं। पर तुम जैसी सुन्दर स्त्री मैंने कहीं नहीं देखी। यदि तुम मेरी हो गई, तो जो चाहोगी, वह दे दूँगा। मेरा सारा राज्य तुम्हारा है। मैं भी तुम्हारा हूँ।”

मोहिनी ने स्वर्नांगद का दास्य हाथ पकड़कर कहा—“यदि यही बात है, तो मुझसे विवाह कर लो, नहीं तो, जो हमारा पुत्र होगा, वह बेदास समझा जायेगा।

स्वर्नांगद ने उसकी इच्छानुसार शास्त्रोक्त रीति से उसके साथ विवाह कर लिया। “अब तुम जो चाहो करो, क्या यही पूरे फिर। या किसी और पर्वत पर चलो। या हम जाने घर चलो।”

मोहिनी उसके साथ घर आने के लिए मान गई।

अभी है।



चीन के मन्दिरों में सब से अधिक यतिष्ठ इस स्वर्गालय को १९२० में युन्ग-की सम्राट ने बनवाया था । यही सम्राट स्वयं अकेला आराधना करता था और वर्ष में तीन बार बलिर्घा दिया करता था ।





दुरम्भल
परिचयार्थ

गजब की है ये छिपकारी !

लेखक :
राजनकुमार मुखर्जी - भाटाबाटा



पुरातन
परिचय

देखूँ कैसी थी प्राचीन भारत की नारी !!

लेखक :
लखनकुमार मुखर्जी - भादवापुरा

फोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मार्च १९६५

११

पारितोषिक (१०)



सुपरी परियोजनाओं काई पर ही भेजें !

ऊपर के फोटो के लिए उपयुक्त परियोजनाओं काई पर भेजें। परियोजनाओं की तीन प्रतियाँ भेजें। और प्रत्येक प्रतियोजना की प्रतियाँ पूरे राज्य की प्रतियों के साथ काई पर ही भेजकर निम्नलिखित करें

पर प्रतियोजना काई पर १९६५ के अन्त में भेजनी चाहिए।

फोटो-परियोजना-प्रतियोगिता

अन्तर्गत में प्रकाशन,

अन्तर्गत में, अन्तर्गत में

मार्च प्रतियोगिता - फल

मार्च के फोटो के लिए निम्नलिखित परियोजनाओं की प्रतियाँ भेजें।

इसके अन्त में १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

प्रतियोजना भेजें। प्रतियोजना की प्रतियाँ भेजें।

प्रतियोजना भेजें। प्रतियोजना की प्रतियाँ भेजें।

अन्त में: अन्तर्गत में, अन्तर्गत में

C. O. भो. प्र. अन्तर्गत में, अन्तर्गत में, अन्तर्गत में (अ. अ.)

दिलीप और साथी फिल्म देखते हैं

